Discover your divinity with us
A/C Showroom
ज्ञान गंगा ॐ मूर्ति माला केन्द्र
उजाला भवन स्टेशन रोड, दुर्ग
0788-4030383, 3293199
भगवान के वस्त्र, श्रृंगार मूर्तियां एवं समस्त पूजन सामग्री संगमरमर व पीतल की मूर्तियां राशि रत्न एवं उपरत्न उपलब्ध

राष्ट्र एवं राज्य के प्रगति पथ पर...

समय दर्शन

रायपुर एवं दुर्ग से प्रकाशित

ESTD : Since 2011

संस्थापक : स्व. श्रीमती निलिमा खड़तकर

निष्पक्ष निर्भीक खबरों के साथ

श्री दुर्ग शहर में सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य
माँ दुर्गा उपासक मां बगुलामुखी, माँ कामख्या, माँ भद्रकाली, माँ शतचंडी की असीम कृपा साधना द्वारा समस्त समस्याओं का मार्ग दर्शन हेतु
पं. एम.पी. शर्मा/
मो. 8109922001
फीस 251/- मात्र
पता:- श्री दुर्गा ज्योतिष कार्यालय सिकोला भाठा, सब्जी मार्केट के सामने, धमधा नाका, दुर्ग

वर्ष 06, अंक 335 पृष्ठ 8, मूल्य 3.00 रूपये रायपुर, बुधवार 29 जनवरी 2025 www.samaydarshan.in

गुरसाई भीड़ ने तहस-नहस किया रेलवे स्टेशन

बांग्लादेश में फिर सुलगी हिंसा, रोकी गईं 400 ट्रेनें

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश में रेलवे की सेवा ठप हो गई है. ट्रेन ड्राइवर और कर्मचारी मंगलवार को अनिश्चितकालीन हड़ताल पर चले गए. इस कारण देशभर में ट्रेनें जहां थीं वहीं खड़ी हो गईं. बांग्लादेश के 'द डेली स्टार' की रिपोर्ट के मुताबिक रेलवे कर्मचारी रिटायरमेंट के बाद विशेष भत्ते और अन्य लाभों की मांग कर रहे हैं. सोमवार को रेलवे अधिकारियों और ड्राइवर संघ के नेताओं के बीच बैठक हुई थी, जिसमें कोई भी निष्कर्ष नहीं निकला. बैठक के बाद, बांग्लादेश रेलवे के प्रतिनिधि अतिरिक्त महानिदेशक अहमद महबूब चौधरी ने द डेली स्टार को बताया कि संघ के नेता अपनी मांगों पर 'अड़े' हुए थे और बैठक को बीच में ही छोड़ दिया.

बांग्लादेश रेलवे रनिंग स्टाफ और श्रमिक कर्मचारी यूनियन के कार्यवाहक अध्यक्ष सैदुर रहमान ने जोर देकर कहा कि चूंकि अधिकारियों के साथ कोई सार्थक बातचीत नहीं हुई, इसलिए उनकी देशव्यापी हड़ताल शुरू हो गई है. रहमान ने कहा, 'हमारी देशव्यापी अनिश्चितकालीन काम बंदी शुरू हो गई है क्योंकि अधिकारियों के साथ कोई सार्थक बातचीत नहीं हुई. सभी प्रकार की ट्रेनें, जिसमें मालगाड़ी और तेल टैंकर शामिल हैं, काम बंदी के दायरे में होंगी.'

उन्होंने कहा कि आधी रात के बाद कोई ट्रेन अपनी यात्रा शुरू नहीं करेगी, लेकिन जो ट्रेनें पहले से ही चल रही हैं, वे हड़ताल से प्रभावित नहीं होंगी. बांग्लादेश रेलवे प्रतिदिन 350 से अधिक यात्री ट्रेनें चलाता है, जिसमें 100 से अधिक इंटरसिटी ट्रेनें और 30 से अधिक मालगाड़ियां शामिल हैं. मैनपावर की कमी के कारण, ट्रेन ड्राइवर और उनके सहायक (लोकोमास्टर, सहायक लोकोमास्टर), गार्ड और यात्रा टिकट चेकर अपनी शिफ्ट से अधिक घंटे काम करते हैं. हालांकि उन्हें अतिरिक्त काम के लिए भुगतान किया जाता है,. 2021 तक उन्हें ओवरटाइम के आधार पर पेंशन लाभ मिलता था.

शेख हसीना ने बंद की थी पेंशन

हालांकि, नवंबर 2021 में, अवामी लीग सरकार ने अतिरिक्त काम के लिए पेंशन लाभ देना बंद कर दिया. अप्रैल 2022 में हड़ताल के बाद, रेलवे मंत्रालय ने हस्तक्षेप किया और लाभ जारी रखने का निर्णय लिया. फिर भी, कर्मचारी नवंबर 2021 के आदेश को रद्द करने की मांग कर रहे हैं. इसके अलावा, 2022 में नियुक्त नए सहायक लोकोमास्टरों को यह लाभ नहीं मिला है. उनके नियुक्ति पत्र में कहा गया था कि उन्हें सेवा के दौरान या सेवानिवृत्ति के बाद अतिरिक्त वेतन नहीं मिलेगा. पिछले साल दिसंबर में, नए भर्ती किए गए लोकोमास्टरों ने हड़ताल की. उन्होंने अपने पूर्ववर्तियों को दिए गए लाभों की मांग की. साथ ही, लोकोमास्टरों ने कई दिनों तक अतिरिक्त ड्यूटी लेना बंद कर दिया और 2021 के गजट को रद्द करने की मांग की. उन्होंने रेलवे अधिकारियों से आश्वासन मिलने के बाद अपना विरोध समाप्त कर दिया.

पूर्वी भारत देश का विकास इंजन है और ओडिशा इसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा है : पीएम मोदी

भुवनेश्वर (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को उत्कर्ष ओडिशा कार्यक्रम को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने कार्यक्रम में आए लोगों को भारत की उपलब्धियों से अवगत कराया।

उन्होंने कहा,मुझे बताया गया है कि यह ओडिशा के इतिहास में सबसे बड़ा निवेशक शिखर सम्मेलन है ङ्क 5 से 6 गुना अधिक निवेशक इसमें भाग ले रहे हैं। मैं इसके लिए ओडिशा सरकार को बधाई देता हूं। मेरा मानना है कि पूर्वी भारत देश का विकास इंजन है और ओडिशा इसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जब भारत का वैश्विक विकास में बहुत बड़ा योगदान था, तो भारत के पूर्वी हिस्से दक्षिण पूर्व एशिया के साथ व्यापार का मुख्य केंद्र हुआ करते थे।

पीएम मोदी ने कहा,2025 की शुरुआत में जनवरी में ओडिशा की यह मेरी दूसरी यात्रा है। कुछ दिन पहले, मैं प्रवासी भारतीय दिवस कार्यक्रम का हिस्सा था, और आज मैं यहां उत्कर्ष ओडिशा

कॉन्क्लेव में हूं। मैं ओडिशा के लोगों को बधाई देता हूं।

प्रधानमंत्री ने कहा,जब इंडोनेशिया के राष्ट्रपति भारत के दौरे पर थे, तो उन्होंने कहा कि ओडिशा उनके डीएनए में है। ओडिशा के पास एक विरासत है, जो इसे दक्षिण पूर्व एशिया से जोड़ती है। इस सदी में ओडिशा फिर से उस विरासत को पुनर्जीवित करने के लिए काम कर रहा है।

उन्होंने कहा,ओडिशा में हमारी सरकार लगातार नई-नई संभावनाओं को विकसित करने की दिशा में काम कर रही है। यहां हमारी हजारों करोड़ों रुपये की परियोजनाएं चल रही हैं।

100 जन्मों के बाद भी स्वर्ग नहीं जा पाएंगेज महाकुंभ पर बयान देकर घिरे मल्लिकार्जुन खरगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने महाकुंभ को लेकर ऐसा बयान दे दिया कि जिसपर सियासी हंगामा मच गया है। उनके निशाने पर केंद्रीय मंत्री अमित शाह थे, लेकिन भाजपा ने इसे आस्था पर हमला करार देते हुए कांग्रेस को सनातन विरोधी बता दिया।

मल्लिकार्जुन खरगे ने सोमवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह पर निशाना साधते हुए विवाद खड़ा कर दिया। उन्होंने कहा कि प्रयागराज के संगम में पवित्र स्नान करने के बाद भी अमित शाह 100 जन्मों के बाद भी स्वर्ग नहीं जा पाएंगे। इस टिप्पणी पर कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए बीजेपी ने कांग्रेस कोहिंदू विरोधी करार दिया और पूछा कि क्या कांग्रेस अन्य धार्मिक भावनाओं का भी उसी तरह अपमान कर सकती है जैसे वह वर्षों से सनातन धर्म का अपमान करती आ रही है। अमित शाह सोमवार को चल रहे महाकुंभ मेले के दौरान त्रिवेणी संगम में पवित्र स्नान करने प्रयागराज पहुंचे। कई हिंदू संतों और साधुओं के साथ उन्होंने इस अवसर पर भगवान की पूजा-अर्चना की. मध्य प्रदेश के महू में एक जनसभा को संबोधित करते हुए खरगे ने कहा,प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह ने मिलकर इतने पाप किए हैं कि वे 100 जन्मों में भी स्वर्ग नहीं जा पाएंगे।

खड़गे ने संगम में पवित्र स्नान करने वाले बीजेपी नेताओं की आलोचना को और तेज करते हुए कहा,बीजेपी नेता एक दौड़ में हैं, पवित्र स्नान को एक प्रतिस्पर्धा के रूप में ले रहे हैं। उन्होंने सभा से पूछा,अरे भाई, गंगा में डुबकी लगाने से गरीबी दूर होती है क्या? गंगा में डुबकी लगाने से खाना मिलता है क्या? लेकिन जल्द ही खरगे को अपने बयान का अहसास हुआ।

अब व्हाट्एसएप या ई-मेल से आरोपी को नोटिस नहीं भेज सकेगी पुलिस

सुप्रीम कोर्ट ने दिया निर्देश

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) या भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 (बीएनएसएस) के तहत पुलिस व्हाट्सएप या अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के जरिए आरोपी व्यक्ति को नोटिस नहीं भेज सकती है। जस्टिस एम.एम. सुंदरेश और जस्टिस राजेश बिंदल की बेंच ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को निर्देश दिया कि वे पुलिस को सीआरपीसी की धारा 41ए या बीएनएसएस की धारा 35 के तहत नोटिस भेजने के लिए केवल वहीं तरीके अपनाने का निर्देश दें, जिनकी कानून के तहत अनुमति हो।

शीर्ष कोर्ट ने कहा, यह पूरी तरह से स्पष्ट है कि व्हाट्सएप या अन्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से नोटिस भेजना सीआरपीसी और बीएनएसएस के तहत तय की गई विधियों का विकल्प नहीं हो सकता। यह आदेश तब आया जब कोर्ट ने वरिष्ठ वकील सिद्धार्थ लूथरा का सुझाव स्वीकार किया, जिन्हें इस मामले में एमिकस क्यूरी के रूप में नियुक्त किया गया था। लूथरा ने उन मामलों का जिक्र किया, जहां सीआरपीसी, 1973 की धारा 41ए के तहत नोटिस व्हाट्सएप के जरिए भेजा गया, लेकिन आरोपी जांच अधिकारी के सामने पेश नहीं हुए।

उन्होंने कहा कि पुलिस को सीआरपीसी, 1973 की धारा 41ए या बीएनएस, 2023 की धारा 35 के प्रावधानों को नजरअंदाज करके नोटिस व्हाट्सएप या अन्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से नहीं भेजने चाहिए, बल्कि उन्हें सामान्य विधि का पालन करना चाहिए। कोर्ट ने यह निर्देश सतेंद्र कुमार अंतिल के मामले में दिए। बेंच ने आगे सभी उच्च न्यायालयों को निर्देश दिया कि वे अपनी-अपनी समितियों की बैठकें आयोजित करें, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनके पिछले और वर्तमान फैसलों का पालन हर महीने सभी स्तरों पर किया जाए और संबंधित अधिकारियों द्वारा हर महीने अनुपालन रिपोर्ट पेश की जाएं। सुप्रीम कोर्ट ने उच्च न्यायालयों के रजिस्ट्रार जनरल और सभी राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य सचिवों को तीन हफ्ते के भीतर अनुपालन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया।

कांग्रेस को हटाकर भाजपा का परचम लहराने अपील

भाजपा की नामांकन रैली विधायक गजेन्द्र यादव ने कार्यकर्त्ताओ का उत्साहवर्धन किये

दुर्ग (समय दर्शन)। दुर्ग निगम चुनाव के लिए भाजपा द्वारा घोषित महापौर एवं पार्षदो ने अंतिम दिन अपना नामांकन दाखिल किये। उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा, राष्ट्रीय नेत्री सरोज पाण्डेय एवं विधायक गजेन्द्र यादव के साथ सभी प्रत्याशियों ने कलेक्टरेट में नामांकन जमा कर रैली के साथ सभा स्थल पहुँचे और शहर सरकार से कांग्रेस को हटाकर भाजपा का परचम लहराने अपील किये। बीते 5 साल में कांग्रेसी महापौर द्वारा किये भ्रष्टाचार को उजागर करते हुए भाजपा सरकार की एक साल की उपलब्धि पर मुहर

लगाने अपील किये।

भाजपा प्रत्याशी अलका बाघमार ने पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के साथ कलेक्टोरेट जाकर नामांकन का दूसरा से दाखिल किये। नामांकन पश्चात् पुराना बस स्टैंड में सभा का आयोजन किया गया जहाँ भाजपा नेताओं ने निगम चुनाव में सभी प्रत्याशी को ऐतिहासिक जीत दिलाने कार्यकर्त्ताओ में ऊर्जा का संचार किये। नगरीय निकाय चुनाव के लिये मंगलवार को नामांकन का अंतिम दिन है। दुर्ग निगम चुनाव के लिए महापौर एवं पार्षदो को चुनने 11 फरवरी को मतदान किया जाना है। हजारों की संख्या में पहुँचे कार्यकर्त्ताओ को उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा एवं भाजपा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सरोज पाण्डेय ने सम्बोधित करते हुए बीते पांच साल से दुर्ग की जनता कांग्रेस सरकार का दंश झेल रही है अब इन्हे उखाड़ फेकना है। दुर्ग निगम में बैठकर कांग्रेसियों ने सिर्फभ्रष्टाचार किया है। जनता को पानी, बिजली और सफाई जैसे आवश्यक कार्य को भी ठीक से नहीं किये।

दुर्ग में प्रेमलता साहू की नामांकन रैली में उमड़ा जनसैलाब

दुर्ग में कांग्रेस एकजुट होकर इतिहास रचने को तैयार- प्रेमलता

दुर्ग (समय दर्शन)। नगर निकाय चुनाव के लिए कांग्रेस ने अपनी शक्ति और एकजुटता का भव्य प्रदर्शन किया। मेयर प्रत्याशी श्रीमती प्रेमलता साहू की नामांकन रैली, जो कांग्रेस भवन से शुरू हुई, शहर में कांग्रेस के विजयी अभियान का संदेश दे गई। 60 वार्डों के सभी कांग्रेस प्रत्याशी पूरे उत्साह और जोश के साथ इस रैली में शामिल हुए, और उनकी उपस्थिति ने जनता में जीत का भरोसा और मजबूत किया। समर्थकों का विशाल जनसैलाब और कार्यकर्ताओं की ऊर्जा ने पूरे शहर को कांग्रेसमय बना दिया।

रैली के दौरान ढोल-नगाड़ों की गूंज, कार्यकर्ताओं के जोशीले नारे, और कांग्रेस की झंडियों से सजे हुए रास्तों ने चुनावी माहौल को गर्मा दिया। जनता की भारी भागीदारी और कार्यकर्ताओं के उत्साह ने यह स्पष्ट कर दिया कि दुर्ग में कांग्रेस एकजुट होकर इतिहास रचने को तैयार है।

कांग्रेस भवन से शुरू हुई यह रैली यह संदेश भी दे गई कि दुर्ग की जनता ने कांग्रेस के हाथों में विश्वास जताने का मन बना लिया है। अब दुर्ग तैयार है कांग्रेस की एक और ऐतिहासिक जीत के लिए!

गाजे बाजे के रैली निकालकर भरा नामांकन, पूर्व सीएम भूपेश बघेल भी पहुंचे

भाजपा और कांग्रेस ने नामांकन दाखिल करने से पहले किया शक्ति प्रदर्शन

भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष जितेंद्र वर्मा ने भाजपा की कमान संभाली

पाटन (समय दर्शन)। नगर पंचायत पाटन चुनाव के अध्यक्ष एवं पार्षद पद के लिए नामांकन भरने की आखिरी दिन मंगलवार को दोनों ही पार्टी के प्रत्याशियों ने आज नामांकन भरा। इससे पहले भाजपा कांग्रेस दोनों ही पार्टी के प्रत्याशियों ने शक्ति प्रदर्शन किया। गाजे बाजे के साथ रैली निकालते हुए नामांकन भरने के लिए एसडीएम कार्यालय पहुंचे। कांग्रेस की तरफ से पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल प्रत्याशियों के साथ नामांकन रैली में शामिल हुए। इसके अलावा भाजपा प्रत्याशियों के मनोबल बढ़ाने के लिए

आज भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष जितेंद्र वर्मा के साथ भाजपा के संगठन के लोग भी मौजूद रहे। सर्वप्रथम कांग्रेस के अध्यक्ष पद के प्रत्याशी लक्ष्मी नारायण पटेल सहित सभी 15 पार्टी के घोषित पार्षद प्रत्याशियों के साथ रैली के रूप में एसडीएम कार्यालय पहुंचे। यहां पर नामांकन दाखिल किया गया। नामांकन दाखिल करने के बाद पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने पत्रकारों से कहा कि इस चुनाव में कांग्रेस की जीत होगी। इस अवसर पर प्रमुख रूप से कांग्रेस के दुर्ग जिला अध्यक्ष निर्मल कोसरे, नगर पंचायत के निवर्तमान अध्यक्ष भूपेंद्र कश्यप, ब्लॉक कांग्रेस कमेटी पाटन के अध्यक्ष महेंद्र वर्मा, पूर्व ओएसडी आशीष वर्मा, नगर कांग्रेस कमेटी पाटन के अध्यक्ष हेमंत देवांगन सहित जवाहर वर्मा ,तरुण बिजौर,गुड्डा शर्मा के साथ बहुत से कांग्रेस के कार्यकर्ता मौजूद रहे ।

जैसे ही कांग्रेस के प्रत्याशी फॉर्म जमा करके निकले उसके बाद रैली के रूप में भाजपा के अध्यक्ष पद की प्रत्याशी पार्षद पद के प्रत्याशी एक साथ नामांकन दाखिल करने के लिए पहुंचे। भाजपा के अध्यक्ष पद के प्रत्याशी योगेश निक्की भाले के साथ ही भाजपा के घोषित पार्षद प्रत्याशी फर्म दाखिल किया। इस अवसर पर सांसद विजय बघेल, भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष जितेंद्र वर्मा ,मंडल अध्यक्ष रानी बंछोर,पूर्व मंडल अध्यक्ष खेमलाल साहू ,सांसद प्रतिनिधि राजा पाठक, राजेश वर्मा कृष्ण भाले, हर्ष भाले सहित पार्टी के वरिष्ठ कार्यकर्ता हुआ नेता मौजूद रहे ।

पुलिस की तगड़ी व्यवस्था रही

भाजपा व कांग्रेस की नामांकन रैली को देखते हुए नामांकन स्थल पर पुलिस की तगड़ी व्यवस्था रखी गई थी। एसडीओपी अनूप लकड़ा खुद मोर्चा संभाले थे। उनके साथ जाम गांव आर, रानीतराई तथा पाटन थाना प्रभारी भी अलग-अलग जगह ड्यूटी कर रहे थे । नामांकन स्थल पर कहीं भी अप्रिय ना बने इसके लिए पुलिस तैयार थी। साथ ही साथ सुरक्षा के भी व्यापक बंदोबस्त किए थे। आज नामांकन दाखिल का आखिरी दिन होने के कारण एसडीएम कार्यालय में काफी भीड़ भी रही।

संक्षिप्त समाचार

नगरीय निकाय निर्वाचन: ईवीएम मशीन के प्रदर्शन हेतु स्वीप कार्यक्रम दल रवाना

मुंगेली (समय दर्शन) नगरीय निकाय निर्वाचन 2025 अंतर्गत नगर पालिका परिषद लोरमी के विभिन्न वार्डों में ईवीएम मशीन के प्रदर्शन हेतु स्वीप कार्यक्रम दल को एसडीएम कार्यालय लोरमी से रवाना किया गया। रिटर्निंग ऑफिसर अजीत पुजारी ने बताया कि स्वीप कार्यक्रम दलों के द्वारा मतदाता जागरूकता अभियान के तहत वार्डों में जाकर ईवीएम मशीन के प्रदर्शन के साथ ही मतदाताओं को मतदान करने जागरूक किया जाएगा। इस दौरान सहायक रिटर्निंग ऑफिसर चंद्र प्रकाश सोनी एवं लालजी चंद्राकर, मास्टर ट्रेनर राघवेंद्र सोनी, गिरधारी लाल डड़सेना सहित अन्य अधिकारी-कर्मचारी मौजूद रहे।

छापामार कार्रवाई कर 6 .3 लीटर देशी मदिरा प्लेन जब्त

मुंगेली (समय दर्शन) मुंगेली विकासखण्ड के ग्राम टिंगीपुर में छापामार कार्रवाई कर 22 जनवरी को शेरदास खाण्डे से 6.3 लीटर देशी मदिरा प्लेन जब्त किया गया है। बता दें कि कलेक्टर राहुल देव के निर्देशानुसार जिले में अवैध शराब पर नियंत्रण के लिए गठित टीम द्वारा लगातार कार्रवाई की जा रही है। सहायक आयुक्त राजेश जायसवाल ने बताया कि आरोपी को जेल दाखिल कर आबकारी अधिनियम के तहत कार्रवाई की जा रही है। इस दौरान आबकारी विभाग के अधिकारी-कर्मचारी मौजूद रहे।

होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया ने लॉन्च कियानया 2025 एक्टिवा

रायपुर: होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया (HMSI) ने आज भारतके सबसे लोकप्रिय स्कूटर एक्टिवा का नया OBD2B-अनुपालन संस्करण लॉन्च किया, जो तकनीक, सुविधा और स्थिरता के अगले स्तरतक पहुंचाता है। नए फीचर्स से लैस यह अपडेटेड एक्टिवा ग्राहकों कीबदलती जरूरतों को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किया गया है। नई 2025 होंडा एक्टिवा की कीमतें 80,950 रुपये (एक्स-शोरूम दिल्ली) से शुरूहोती हैं। नए एक्टिवा को पेश करते हुए होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया केप्रबंध निदेशक, प्रेजिडेंट एंड सीईओ, श्री त्सुत्सुमु ओटानी ने कहा, एक्टिवा हमेशा से भारतीय ग्राहकों के लिए मोबिलिटी को फिर सेपरिभाषित करने में अग्रणी रहा है। अपने नवीनतम 2025 संस्करण केसाथ, यह नवाचार, सुविधा और विश्वसनीयता का आदर्श मिश्रण बनाहुआ है, जिसने इसे भारत का सबसे पसंदीदा स्कूटर बनाया है। TFT डिस्प्ले के साथ ब्लूटूथ कनेक्टिविटी और OBD2B-अनुपालन इंजन कासमावेश तकनीक और स्थिरता के मामले में आगे रहने की हमारीप्रतिबद्धता को दर्शाता है। हमें विश्वास है कि नया एक्टिवा न केवल हमारेग्राहकों के राइडिंग अनुभव को बेहतर बनाएगा बल्कि भारतीय स्कूटरबाजार में होंडा की अग्रणी स्थिति को और मजबूत करेगा।

ब्लेंडर्स प्राइड फैशन टूर: 'द वन एंड ओनली'–एक प्रतिष्ठित और फैशनेबल दुनिया का प्रवेश द्वार

रायपुर। ब्लेंडर्स प्राइड फैशन टूर ने अब तक के अपने सबसे प्रतिष्ठित संस्करण का अनावरण किया है, जिससे 'द वन एंड ओनली'दुनिया की रचना होती है, जहां फैशन केवल एक शुरुआत है। टूर का 2025 संस्करण एक अत्याधुनिक अवतार प्रस्तुत करेगा, जो असाधारणता की सीमाओं को पार करेगा और वैश्विक फैशन, संगीत और मनोरंजन के शानदार प्रदर्शन लेकर आएगा, जो पूर्ण विस्मय से भर देंगे। फैशन डिजाइन काउंसिल ऑफ इंडिया के साथ एक बार फिर जुड़ते हुए, फैशन टूर अपनी ग्लैमरस और भव्य पहचान का जश्न मनाएगा। इसमें भारत के सबसे चर्चित फैशन विशेषज्ञों के साथ-साथ देश के सबसे आकर्षक स्टाइल आइकन्स भी शामिल होंगे, जो निश्चित रूप से पूरे देश का ध्यान आकर्षित करेंगे। हर शहर में, यह टूर अलग-अलग कहानियां रचेगा, जो इसकी प्रतिष्ठित दुनिया की अनूठी व्याख्याओं को प्रदर्शित करेगी। गुरुग्राम में, यह भारत के सच्चे फैशन आइकन रोहित बल के भव्य उत्सव के साथ शुरू होगा, जहां उनके कलात्मक प्रतिभा को फिर से जीवंत किया जाएगा। इस मौके पर फैशन, बॉलीवुड, मीडिया और बिजनेस जगत के 70 से अधिक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व शामिल होंगे, जो वर्षों से उनके करीबी रहे हैं।मुंबई में, यह टूर देश की ग्लैमर राजधानी की प्रतिष्ठित पृष्ठभूमि में, तरुण तहिलियानी के साथ एक प्रभावशाली फैशन शो पेश करेगा।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर दुलारपाली विद्यालय में विविध कार्यक्रम आयोजित

शंकर लहरे/ सरायपाली (समय दर्शन)। शाउमावि दुलारपाली में 76 वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन रखा गया। प्रथम दिवस समस्त छात्र, शिक्षक और उपस्थित ग्रामवासियों द्वारा समवेत स्वर में राष्ट्रगीत वंदे मातरम का गायन किया गया। साथ ही राष्ट्रीय बालिका दिवस और राष्ट्रीय शिक्षा दिवस भी मनाया गया। इस अवसर पर व्याख्याता रोहित साहू ने वंदे मातरम गीत के इतिहास और राष्ट्रगीत बनने तक का सफरनामा प्रस्तुत किया। संस्कृत व्याख्याता टेकलाल पटेल द्वारा राष्ट्रगीत के प्रत्येक शब्द का अर्थ बताकर उसके महत्व और राष्ट्र के प्रति हमारे कर्तव्य का बोध कराया गया। द्वितीय दिवस के अवसर पर एनएसएस इकाई दुलारपाली के द्वारा वंदे मातरम गान का गायन और सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई। जिसका थीम भी वंदे मातरम ही रहा। एनएसएस के वालंटियर्स द्वारा अनेकता में एकता विषय पर किसानों एवं सैनिकों के त्याग और बलिदान को नृत्य नाटिका के रूप में प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शाउमावि बिछिया के व्याख्याता चंद्रभानु मिश्रा थे उन्होंने कृषि और अनाज उत्पादन के क्षेत्र में दुलारपाली ग्राम के इतिहास को बताते हुए यहां के किसानों के मेहनत और परिश्रम को मातृभूमि की सेवा बताया। बच्चों को प्रेरित करते हुए उन्होंने कहा कि हम जिस स्थान पर भी हैं अगर अपने दायित्व का निर्वहन सही रूप में करते हैं तो वास्तव में देशभक्त हैं।साथ ही उन्होंने ग्राम पंचायत के सौजन्य से प्राप्त , विद्यालय के शैक्षणिक एवं सहशैक्षणिक गतिविधियों में वर्ष भर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। वार्षिक परीक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों सहित उनके पालकों को सम्मानित किया गया। गणतंत्र दिवस के अवसर पर विद्यालय परिसर में प्राचार्य प्रेमानन्द भोई ने झंडोत्तोलन किया, प्रभातफेरी के पश्चात विद्यार्थियों ने देश भक्ति भाव से ओतप्रोत गीत व नृत्य प्रस्तुत किया। जिसमें परी वैष्णव, समीर साहू, दुर्योधन निषाद, देवदास, हर्ष साहू, अरमान साहू, विवेक चौहान, मयंक पटेल, हिमेश नेताम, योगेश नेताम, दुर्गेश, हर्ष नरेंद्र और टिकेश्वर आदि प्रमुख रहे। भूतपूर्व भारतीय सैनिक धर्मेन्द्र चौधरी की उपस्थिति विशेष रही उन्होंने युवाओं को अग्निवीर बनने के लिए प्रेरित किया और देशभक्ति का पाठ पढ़ाया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन सांस्कृतिक प्रभारी टेकलाल पटेल और आभार प्रदर्शन एन एस एस प्रभारी कृष्ण कुमार नायक ने किया। इस अवसर पर दुबेलाल पोर्ते, शरद बाघ,रोहित साहू, रूपधर पटेल, सुशांत प्रधान, हाराधन चौधरी, राकेश प्रधान, सी एस विशाल, डी एल खटकर, संखलाल जगत, अमित चौरसिया, द्रुपत पटेल, जयनारायण पटेल, ममता पोर्ते, एल के नायक, अंजू साहू, किरण चौहान, सहित समस्त शिक्षक शिक्षिकाएँ और ग्रामवासी उपस्थित थे।

उरला में शाकंभरी जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

दुर्ग (समय दर्शन)। छत्तीसगढ़ सोनकर समाज दुर्ग राज के द्वारा सोनकर समाज की अधीष्ठात्रित देवी शकँभारी जयंती उरला वार्ड क्रमांक 57 मे सामाजिक लोगो के द्वारा माँ शकँभारी जी की महाआरती कर हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दुर्ग शहर विधायक गजेंद्र यादव, योग आयोग के अध्यक्ष रुपनारायण सिन्हा ,भाजपा जिला अध्यक्ष सुरेंद्र कौशिक थे । गजेंद्र यादव ने कहाँ सोनकर समाज जन जन का पोषण करने वाला समाज है समाज के माताओ बहनो को प्रोत्साहित किया एव सोनकर समाज भवन के लिए 25 लाख देने की घोषणा किया।

रुपनारायण सिन्हा ने समाज के लोगो को राजनैतिक एव अन्य छेत्रो मे बढ़चढ़ कर हिस्सा लेने का आह्वान कर भविष्य मे सोनकर समाज को हर संभव मदद एव प्रोत्साहित करने का आश्वासन दिया ।

उक्त कार्यक्रम का संचालन मुकेश सोनकर ने किया उक्त कार्यक्रम मे छत्तीसगढ़ सोनकर समाज के प्रदेश अध्यक्ष शारदा प्रसाद सोनकर प्रदेश महामंत्री चेतन सोनकर, सौरभ सोनकर, बंसी लाल सोनकर, राजेश सोनकर, श्याम लाल सोनकर, गन्नू लाल सोनकर, विजय सोनकर, राजू कठोलिया, सूरज सोनकर, मानव सोनकर, राहुल सोनकर, राकेश सोनकर, गोलू सोनकर, प्रिंस सोनकर, मनीष सोनकर, खुमान सोनकर, ओम प्रकाश सोनकर, महेश सोनकर, एवम समस्त सोनकर समाज दुर्ग राज के पदाधिकारी एव समाज के देवतुल्य जनमानस उपस्थित थे।

अमेज़न इंडिया ने भारत में विक्रेताओं के लिए ई-कॉमर्स के लाभों को उजागर करने के लिए शुरू किया दिखोगेतोबिकोगे अभियान

मुंबई : अमेज़न इंडिया ने एक नया ब्रांड अभियान, #दिखोगेतोबिकोगे (जिसका अर्थ है 'यदि प्रचार होगा तो आपका सामान बिकेगा) पेश किया है, जिसमें इस बारे में जागरूकता बढ़ाने की कोशिश की गई है कि भारत में छोटे व्यवसायों के लिए कंपनी के डिजिटल मार्केटप्लेस पर बिक्री करना सरल और प्रभावी है। इस अभियान में तीन रचनात्मक और हास-परिहास भरे विज्ञापन शामिल हैं और हरेक में अलग-अलग परिदृश्य में विक्रेता अपने उत्पादों को बढ़ावा देने और बेचने के लिए अपरंपरागत तरीके अपनाते हैं। ये वीडियो विक्रेताओं के लिए अमेज़न के मार्केटप्लेस के लाभों को उजागर करते हैं, जैसे ग्राहकों की विशाल संख्या, भारत के 100+ सेवा योग्य पिन कोड और 18+ वैश्विक मार्केटप्लेस तक पहुंच। यह अभियान ऑनलाइन बिक्री को सुलभ और प्रभावशाली बनाकर सभी आकार के व्यवसायों को सशक्त बनाने के लिए अमेज़न की प्रतिबद्धता पर जोर देता है। एनॉर्मस ब्रांड्स एलएलपी ने इसे डिज़ाइन किया है और इसकी अवधारणा तैयार करने के साथ-साथ इसका निर्माण भी किया है।

दिखोगेतोबिकोगे अभियान: विज्ञापन फिल्म 1: अमेज़न के साथ करोड़ों ग्राहकों तक पहुंचें। विज्ञापन फिल्म 2: अमेज़न के साथ 100+ सेवा योग्य पिन कोड तक पहुंचें। विज्ञापन फिल्म 3: 18+ अमेज़न वैश्विक बाज़ारों के माध्यम से बेचें। अमेज़न इंडिया के सेलिंग पार्टनर सर्विसेज़ के निदेशक, अमित नंदा ने कहा, अमेज़न में,हमारा मुख्य तौर पर ई-कॉमर्स के ज़रिये पूरे भारत में छोटे व्यवसायों को सशक्त बनाना चाहते हैं।

स्कोडा का इलैक आधिकारिक तौर पर भारत में लॉन्च हुई

रायपुर: स्कोडा ऑटो इंडिया ने अपनी पहली सब-4-मीटर एसयूवी, काइलैक को भारत में आधिकारिक रूप से लॉन्च कर दिया है। यह लॉन्च कंपनी के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और तेजी से बढ़ते भारतीय एसयूवी बाजार में स्कोडा के लिए नए रास्ते खोलता है।काइलैक स्कोडा की पहली पेशकश है, जो लोकप्रिय सब-4 मीटर सेगमेंट में उतारी गई है। यह गाड़ी भारत में स्कोडा के नए मॉडर्न सॉलिड डिज़ाइन लैंग्वेज का उदाहरण है, जिसमें मजबूती, कार्यक्षमता और प्रामाणिकता को प्राथमिकता दी गई है। ग्राहकों के लिए गाड़ी की टेस्ट ड्राइव और डिलीवरी आज से शुरू हो चुकी है। स्कोडा ऑटो इंडिया के ब्रांड डायरेक्टर पेट्र जेनेबा ने काइलैक के लॉन्च पर कहा कि यह एसयूवी भारतीय बाजार में स्कोडा के विकास को नई दिशा देने के लिए पूरी तरह तैयार है। काइलैक की उपलब्धता स्कोडा ऑटो इंडिया के लिए एक नए युग की शुरुआत का संकेत है। उन्होंने बताया कि यह गाड़ी सुरक्षा, बेहतरीन ड्राइविंग अनुभव और अपने सेगमेंट के सबसे उन्नत फीचर्स का अद्भुत संयोजन है।कुशाक और स्लाविया की सफलता के बाद, काइलैक स्कोडा की भारत-केंद्रित उत्पाद रणनीति को और आगे बढ़ाती है। यह न केवल नए बाजारों में स्कोडा की उपस्थिति को मजबूत करेगी, बल्कि स्कोडा परिवार से और भी अधिक ग्राहकों को जोड़ने में मदद करेगी।

रजिस्ट्री के कार्य में लापरवाही एवं कोताही बर्दाश्त नहीं - कलेक्टर

शासन के खाते में निर्धारित शुल्क की राशि अनिवार्य रूप जमा कराने के दिए निर्देश

अवैध जमीन बिक्री के मामले में भूमाफियाओं पर होगी कड़ी कार्रवाई - पुलिस अधीक्षक

कलेक्टर-एसपी ने रजिस्ट्री कार्यालय मुंगेली का किया औचक निरीक्षण

मुंगेली (समय दर्शन)कलेक्टर राहुल देव और पुलिस अधीक्षक भोजराम पटेल ने रजिस्ट्री कार्यालय मुंगेली का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने अर्जी नवीस के दस्तावेजों की जांच कर पोर्टल में एंट्री का अवलोकन किया। इसके बाद कलेक्टर और एसपी ने रजिस्ट्री कार्यालय में नक्शा बटांकन और विभिन्न कारणों से रजिस्ट्री कार्य में आ रही समस्याओं की जानकारी ली। साथ ही उन्होंने रजिस्ट्री की पूरी प्रक्रिया को कंप्यूटर में बैठकर चरणबद्ध तरीके से अवलोकन किया। कलेक्टर ने कहा कि रजिस्ट्री कार्य में आ रही समस्याओं का त्वरित समाधान करते हुए संबंधित अधिकारी निर्धारित समय सीमा में रजिस्ट्री कार्य को पूर्ण करें। इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही एवं कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

कलेक्टर ने रजिस्ट्री कार्य को तय समयसीमा में पूर्ण करते हुए शासन के खाते में निर्धारित शुल्क की राशि अनिवार्य रूप से जमा करने की सख्त हिदायत दी। उन्होंने कहा कि रजिस्ट्री में चोरी की शिकायत पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि कहीं भी भूमाफियाओं के द्वारा अवैध जमीन बिक्री की शिकायत पाई जाती है, तो इसे तत्काल संज्ञान में लाया जाए। इस पर जांच करते हुए दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। इस अवसर पर एसडीएम मुंगेली श्रीमती पार्वती पटेल, तहसीलदार और संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

रोहिना में जगह जगह शान से लहराया तिरंगा

शंकर लहरे/ सरायपाली (समय दर्शन)। गणतंत्र दिवस का पर्व रोहिना में बड़े ही धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। शा उच्च प्रा शाला एवं हाईस्कूल प्रांगण में प्रभारी प्राचार्य एके जायसवाल, मिनी आंगनबाड़ी केंद्र में प्रधान पाठक टीआर पटेल, प्रा.शा. में बोधन पटेल, सहकारी समिति रोहिना में बनीतराम सिदार, ग्राम पंचायत कार्यालय में सरपंच जज्ञसिनी चूड़ामणि साहू द्वारा ध्वजारोहण किया गया। उच्च प्राथमिक शाला एवं हाई स्कूल के संयुक्त तत्वावधान में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन रखा गया। जिसके मुख्य अतिथि पूर्व सरपंच सुरेन्द्र सेठ थे, कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रभारी प्राचार्य एके जायसवाल ने एवं सह अध्यक्षता प्रधान पाठक टीआर पटेल ने की तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में शाला प्रबंधन एवं विकास समिति अध्यक्ष नेपाल साहू थे, व्याख्याता के के साहू, शिक्षक एके पटेल, एसके पटेल, लिपिक एसआर साहू एवं कैलाश कमार आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर छात्रों द्वारा मनमोहक लोक नृत्य की प्रस्तुति दी गई। हाई स्कूल की छात्राओं ने जहां सुंदर संबलपुरी नृत्य की प्रस्तुति दी वहीं मिडिल के छात्रों ने भगत सिंह के जीवन पर आधारित लघु नाटिका का मंचन किया। कार्यक्रम का संचालन व्याख्याता कमलेश साहू ने की तथा आभार व्यक्त एके पटेल ने की।

करही के पास बस पलटने की घटना की सूचना मिलते ही कलेक्टर राहुल देव और पुलिस अधीक्षक भोजराम पटेल मौके पर पहुंचे

घटना में किसी के हताहत होने की अभी पुष्टि नहीं हुई है। घायलों को उपचार हेतु एंबुलेंस के माध्यम से नजदीकी चिकित्सालय भेजा गया

मुंगेली (समय दर्शन) मुंगेली थाना क्षेत्र अंतर्गत करही के पास बस पलटी की दुर्घटना, मौके पर पहुंचे कलेक्टर और एसपी घायलों के तत्काल उपचार के लिए स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को दिए निर्देश किसी की हताहत होने की खबर नहीं, सभी यात्री को निकाला गया सुरक्षित मुंगेली थाना क्षेत्र अंतर्गत दोपहर लगभग 01.30 बजे मुंगेली से बिलासपुर जाने वाली यात्री बस करही के समीप डिवाइडर से टकराकर पलट गई। दुर्घटना की सूचना मिलते ही कलेक्टर राहुल देव और पुलिस अधीक्षक भोजराम पटेल मौके पर पहुंचे। प्रशासनिक अमले की तत्परता से बस में सवार व्यक्तियों को बाहर निकाला गया। गंभीर रूप से घायलों को जिला चिकित्सालय भेजा गया, जबकि मामूली रूप से घायल व्यक्तियों को घटना स्थल पर ही प्राथमिक उपचार के बाद उनके घर भेजा गया। इस घटना में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है, हालांकि कुछ लोगों को गंभीर चोटें आई हैं।

कलेक्टर और एसपी ने मौके पर घायलों से बातचीत की, उनका हाल-चाल जाना और उनके समुचित उपचार के लिए चिकित्सा विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने प्रशासनिक अधिकारियों को बस को हटवाकर ट्रैफिक व्यवस्था को सुगम बनाने और दुर्घटना के कारणों की जांच करने के निर्देश दिए। जिला प्रशासन ने मौके पर क्रेन बुलाकर बस को उठवाया और सड़क के किनारे सुरक्षित स्थान पर रखा, जिससे ट्रैफिक व्यवस्था सामान्य हो सकी। यह यात्री बस नियमित रूप से मुंगेली से बिलासपुर के बीच संचालित होती है। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि बाइक सवार को बचाने के प्रयास में यह हादसा हुआ। राहत कार्य समय पर पूरा किया गया, जिससे स्थिति नियंत्रण में रही। घायलों को तत्काल चिकित्सा सुविधा प्रदान की गई। प्रशासन ने अपनी तत्परता से राहत कार्यों को सुचारु रूप से संपन्न किया। इसी तारतम्य में मुंगेली जिला कलेक्टर एवं मुंगेली पुलिस अधीक्षक भोजराम पटेल के द्वारा लगातार पहल कलेक्टर-एसपी की तत्परता से सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति को राहत

मुंगेली कलेक्टर राहुल देव और पुलिस अधीक्षक भोजराम पटेल ने मुंगेली बायपास पर मानवीय संवेदनशीलता का परिचय दिया। बायपास पर ट्रक दुर्घटना देखकर उन्होंने अपनी गाड़ी रुकवाई और ट्रक चालक से मुलाकात की। उन्होंने उसकी स्थिति के बारे में जानकारी ली और तत्काल चिकित्सा सहायता के निर्देश दिए। बताया गया कि यह दुर्घटना गलत दिशा से आ रही मोटरसाइकिल को बचाने के प्रयास में हुई, जिससे कोटा से दुर्ग जा रही ट्रक पलट गई। ट्रक चालक को मामूली चोटें आईं। इस दौरान कलेक्टर और एसपी ने घायल व्यक्ति का हालचाल पूछते हुए भोजन, चिकित्सा और अन्य जरूरतों के बारे में जानकारी ली और समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की। मौके पर पुलिस और संबंधित विभाग के अधिकारी मौजूद रहे

सार समाचार

ऑफिस का ताला टूटा, हजारों रुपए का सामान पार

रायपुर(समय दर्शन)। कमल विहार सेक्टर 8 स्थित ऑफिस का ताला तोड़कर अज्ञात चोर ने हजारों रुपए का सामान पार कर दिया। प्रार्थी की शिकायत पर टिकरापारा पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार प्रार्थी विजय शर्मा 36 वर्ष गुड आइलेण्ड महादेव घाट का रहने वाला है। प्रार्थी का कमल विहार सेक्टर 8 में ऑफिस है। बताया जाता है कि अज्ञात चोर ने प्रार्थी के ऑफिस का ताला तोड़कर डेल कंपनी का लेपटा, टीवी, सीसीटीवी कैमरा व डीवीआर मशीन पार कर दिया। चोरी गए जुमला कीमती करीब 90 हजार रुपए के आसपास बताई जा रही है।

अवैध शराब बेचते चार लोग पकड़ाए

रायपुर(समय दर्शन)। राजधानी पुलिस ने अलग-अलग थाना क्षेत्र में अवैध शराब के साथ 4 लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के पास से कुल 675 पाव देशी व अंग्रेजी शराब सहित बिक्री रकम 2470 रुपए जब्त किया है। पुलिस ने सभी आरोपियों के खिलाफ आबकारी एक्ट के हत कार्रवाई की है। मिली जानकारी के अनुसार खम्हारडीह पुलिस ने गणेश नगर रेलवे फाटक के पास आरोपी सोमेन कर 30 वर्ष को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इसके पास से 17 पाव देशी एवं अंग्रेजी शराब सहित बिक्री रकम 130 रुपए जब्त किया है। वहीं मंदिरहसौद पुलिस ने ग्राम सेरीखेड़ी के पास आरोपी रानी मनहरे 38 वर्ष को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इसके पास से 610 पाव देशी शराब जब्त किया है। इसी तरह खरोरा पुलिस ने आरोपी अमित कुमार देवांगन 21 वर्ष के पास से 11 पाव देशी शराब और बिक्री रकम 1500 रुपए जब्त किया है।

झांकी में रामनामी समुदाय, जनजातीय कला, नृत्य व शिल्प की दिख रही झलक

लाल किले में भारत पर्व 2025 : छत्तीसगढ़ की झांकी बनी आकर्षण का केंद्र

रायपुर(समय दर्शन)। झांकी में रामनामी समुदाय, जनजातीय कला, नृत्य व शिल्प की दिख रही झलकझांकी में रामनामी समुदाय, जनजातीय कला, नृत्य व शिल्प की दिख रही झलक नई दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले में आयोजित हो रहे भारत पर्व 2025 में छत्तीसगढ़ की झांकी विशेष आकर्षण का केंद्र बन गई है। यह झांकी राज्य की समृद्ध जनजातीय परंपराओं और रामनामी समुदाय की विशिष्ट झलक को खूबसूरती से

प्रस्तुत करती है। भगवान श्रीराम के प्रति अटूट भक्ति के लिए प्रसिद्ध रामनामी समुदाय इस झांकी का मुख्य आकर्षण है। उनकी अनोखी परंपराएं, संस्कृति और जीवनशैली दर्शकों को गहराई से प्रभावित कर रही हैं। छत्तीसगढ़ की झांकी में राज्य की सांस्कृतिक विविधता और पारंपरिक लोक जीवन को बड़े ही शानदार तरीके से दर्शाया गया है। झांकी में जनजातीय कला, पारंपरिक नृत्य, और शिल्प की झलक ने देश-विदेश से आए दर्शकों को राज्य की अनमोल सांस्कृतिक धरोहर से रूबरू कराया। साथ ही यह झांकी छत्तीसगढ़ की आदिवासी जीवनशैली और उनकी अनूठी परंपराओं का जीवंत चित्रण प्रस्तुत करती है। भारत पर्व 2025, जो गणतंत्र दिवस के अवसर पर पर्यटन मंत्रालय द्वारा आयोजित किया जा रहा है, भारतीय संस्कृति और परंपराओं को प्रदर्शित करने का उत्कृष्ट मंच है। इस आयोजन में देश के विभिन्न राज्यों की झांकियां, सांस्कृतिक प्रदर्शन और स्थानीय व्यंजनों के स्टॉल जनता के लिए आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं। छत्तीसगढ़ की झांकी ने 'देखो अपना देश' की थीम के तहत राज्य के सांस्कृतिक गौरव और परंपराओं को देश और दुनिया के सामने पेश किया है। यह आयोजन 26 जनवरी से 31 जनवरी तक प्रतिदिन दोपहर 12 बजे से रात 9 बजे तक दर्शकों के लिए खुला है। निशुल्क प्रवेश के साथ, यह पर्व लोगों को भारत की सांस्कृतिक विविधता, पारंपरिक धरोहर, और आधुनिक विकास का अनुभव करने का अनोखा अवसर प्रदान करता है। लाल किले के प्रांगण में छत्तीसगढ़ की झांकी को देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग उमड़ रहे हैं।

गणतंत्र दिवस पर कांकेर में शान से लहराया तिरंगा

बस्तर सांसद महेश कश्यप ने फहराया राष्ट्रध्वज

रायपुर(समय दर्शन)। राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में मुख्य समारोह कांकेर जिला के नरहरदेव शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के खेल परिसर में उत्साहपूर्वक एवं गरिमामय ढंग से मनाया गया। 76वें गणतंत्र दिवस के मुख्य अतिथि के तौर पर बस्तर लोकसभा क्षेत्र के सांसद श्री महेश कश्यप द्वारा राष्ट्रध्वज तिरंगा फहराया एवं मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के संदेश का वाचन किया, साथ ही जवानों द्वारा राष्ट्रगान की धुन पर हर्ष फायर और आकर्षक मार्चपास्ट किया गया। मुख्य अतिथि कश्यप, कलेक्टर निलेशकुमार महादेव क्षीरसागर और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक इंदिरा कल्याण एलेसेला के साथ परेड का निरीक्षण किया। कश्यप ने विभिन्न नक्सल मोर्चों में शहीद हुए जवानों के परिजनों को शॉल एवं श्रीफल भेंटकर सम्मानित किया गया। समारोह में स्कूली विद्यार्थियों के द्वारा विभिन्न शारीरिक मुद्रा एवं योगाभ्यास पर आधारित पीटी का एक साथ प्रदर्शन किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के क्रम में देशभक्ति गीतों पर आधारित रंगारंग एवं चित्ताकर्षक प्रस्तुति दी गई। इसके बाद जिला प्रशासन के तत्वावधान में विभिन्न विभागों के द्वारा महत्वाकांक्षी योजनाओं एवं गतिविधियों पर केन्द्रित झांकियों का प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम के अंत में विभिन्न विभागों में उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय कार्य करने वाले 92 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया। गणतंत्र दिवस के अवसर पर जिला स्तर मुख्य समारोह में 12 टोलियों ने हिस्सा लेकर आकर्षक मार्चपास्ट किया। इनमें गैरशालेय वर्ग में बस्तर फाइटर्स महिला एवं मार्चपास्ट शालेय वर्ग में एनसीसी पीएमश्री नरहरदेव उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का बालिका वर्ग को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के क्रम में कुल 09 विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इनमें सेंट माइकल इंग्लिश मीडियम स्कूल गोविंदपुर प्रथम रहा।

हमारे कार्य ही हमारी जीत के दावे का आधार हैं : विजय शर्मा

रायपुर(समय दर्शन)। छत्तीसगढ़ में आगामी पंचायत चुनावों को लेकर भाजपा ने अपनी उपलब्धियां गिनाते हुए जीत का दावा किया है। उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने पत्रकार वार्ता में कहा कि भाजपा की सरकार पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अंत्योदय सिद्धांत पर चलते हुए अंतिम व्यक्ति तक शासन की योजनाओं का लाभ पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध है। उपमुख्यमंत्री शर्मा ने कहा कि भाजपा सरकार की योजनाओं और जनहित के कार्यों के कारण जनता का भरोसा पार्टी पर बना हुआ है। भाजपा पंचायत और नगरीय निकाय चुनाव में चार इंजन सरकार बनाकर राज्य में विकास के नए अध्याय लिखेगी। उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि

भाजपा सरकार ने किसानों और ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए अनेक ऐतिहासिक निर्णय लिए हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में कैबिनेट ने फैसला लिया है कि फरवरी के पहले पखवाड़े तक सभी किसानों को उनकी उपज के भुगतान की अंतर राशि का एकमुश्त भुगतान कर दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि धान खरीदी के तहत प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान ?3100 प्रति क्विंटल के भाव से खरीदा जा रहा है। किसानों को बकाया बोनस के साथ ही तेंदूपत्ता खरीदी के लिए ?5500 प्रति मानक बोरा की दर तय की गई, जिससे 12 लाख परिवारों को ?240 करोड़ की अतिरिक्त आय हुई। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि महतारी वंदन योजना के तहत 70 लाख महिलाओं के खातों में हर महीने ?1000 सीधे जमा किए जा रहे हैं। महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए रेडी टू ईट योजना को महिला स्व-सहायता समूहों को वापस सौंपा गया है। पांच जिलों में इसे पायलट प्रोजेक्ट के तहत शुरू कर दिया गया है। साथ ही, 200 महतारी सदनों का निर्माण कार्य भी शुरू हो चुका है। शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत देशभर में स्वीकृत सड़कों में से 51त्न सड़कों की स्वीकृति केवल छत्तीसगढ़ को मिली है। राज्य में 2449 किलोमीटर लंबाई की सड़कें स्वीकृत की गई हैं। पंचायत चुनाव प्रभारी सौरभ सिंह ने भाजपा सरकार की नीतियों पर विश्वास जताते हुए कहा कि केंद्र और राज्य की डबल इंजन सरकार ने जनता का भरोसा जीता है। उन्होंने कहा कि भाजपा नत नयन होकर कार्य कर रही है, यही कारण है कि जनता का विश्वास भाजपा पर प्रगाढ़ है। प्रेस वार्ता में भाजपा के पंचायत चुनाव प्रभारी सौरभ सिंह, भाजपा महामंत्री भरत वर्मा, बस्तर संभाग प्रभारी निरंजन सिंह, प्रदेश सह मीडिया प्रभारी अनुराग अग्रवाल, पंचायत चुनाव समिति के सदस्य आकाश विग, और श्रीमती किरण बघेल मौजूद थीं।

सड़क दुर्घटना में युवक की मौत

रायपुर(समय दर्शन)। फुण्डहर चौक के पास अज्ञात वाहन ने बाइक सवार दो युवक को अपनी चपेट में ले लिया। जिससे एक युवक की मौत हो गई। मामले में पुलिस ने अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार मृतक संजय निर्मलकर 20 वर्ष लालपुर का रहने वाला था। बताया जाता है कि वह अपने दोस्त मनोज धीवर के साथ बाइक से कहीं जा रहा था, तभी फुण्डहर चौक के पास अज्ञात वाहन ने बाइक को टक्कर मार दिया। जिससे संजय की मौत हो गई। मामले में तेलीबांधा पुलिस ने मर्ग कायम कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। वहीं अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ अपराध दर्ज किया है।

पंडरी क्षेत्र में धर्मांतरण को लेकर मचा बवाल

रायपुर(समय दर्शन)। राज्य में धर्मांतरण को लेकर लगातार विवाद की स्थिति निर्मित हो रही है। राजधानी में भी ऐसा ही बवाल सामने आ चुका है, राजधानी में विगत कई समय से मतान्तरण के खेल जारी है, ऐसे मामले पहले भी सामने आ चुके है, वहीँ अब बीते दिन रायपुर के मोवा स्थित मितान विहार कालोनी में मतांतरण के मुद्दे पर जमकर हंगामा होने की खबर सामने आई है। दरअसल, मितान विहार के एक मकान में लंबे समय से प्रार्थना और कक्षा की आड़ में धर्म परिवर्तन कराए जाने की सूचना हिंदू संगठन बजरंग दल को मिली थी। इस सूचना के बाद आज सुबह हिंदू संगठन के कार्यकर्ताओं ने मकान के बाहर पहुंचकर नारेबाजी कर बड़ा प्रदर्शन किया। सूचना मिलते ही पंडरी थाना पुलिस, सिटी एएसपी, सीएसपी और साथ थाना प्रभारी समेत पुलिस के आला अधिकारी मौके पर पहुंच गए और स्थिति पर नियंत्रण पाया। इस मामले में सामने आया है कि पुलिस ने मकान के भीतर मौजूद सभी व्यक्तियों को सुरक्षित बाहर निकालकर आरोपियों पर अपराध दर्ज किया गया है। इस मामले में तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस के मुताबिक, मामले में 5 पुरुषों के अलावा कई महिलाएं, युवती और एक नाबालिग भी शामिल थे। पंडरी थाना पुलिस ने मामले में अपराध दर्ज कर लिया है और तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है, धर्मान्तरण कानून के तहत कार्यवाही करने की बात सामने आ रही है। पुलिस मामले की विवेचना कर रही है और आगे की जांच जारी है। इस घटना ने स्थानीय समाज में हलचल मचा दी है और वहीँ इस मामले में पुलिस की कार्यवाही को लेकर हिंदूवादी संगठनों की नजर टिकी हुई है।

तमिलनाडु के सांख्यिकी मंत्री थंगम थेनारासु ने डीएमके सांसद कनिमोझी करुणानिधि के साथ नई दिल्ली में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से मुलाकात की.

महिला शराब विक्रेता से 610 पौवा बरामद

रायपुर(समय दर्शन)। जिले की मंदिर हसौद थाना पुलिस ने थानाक्षेत्र के सेरीखेड़ी से एक महिला शराब विक्रेता को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से 610 पौवा देशी मदिरा मसाला शराब जप्त किया है। बता दें कि वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ग्रामीण एवं मान् नगर पुलिस अधीक्षक माना रायपुर द्वारा क्षेत्र मे लगातार अवैध शराब, गांजा जुआ सट्टा के खिलाफ अभियान चलाकर कार्यवाही किये जाने हेतु निर्देश प्राप्त हुआ है। जिस पर वरिष्ठ अधिकारियों के दिशा निर्देश व मार्गदर्शन मे थाना मंदिर हसौद द्वारा दिनांक 26.012025 को मुखबीर सूचना मिली कि ग्राम सेरीखेड़ी निवासी आरोपिया रानी मनहरे पति स्वर्गीय अगमदास मनहरे उम्र 38 वर्ष अपने घर में अवैध रूप से शराब रखकर बिक्री कर रही है। जिसपर कार्यवाही करते हुए पुलिस ने महिला के घर पहुंचकर उसके घर से 610 पौवा देशी मदिरा मसाला शराब जप्त किया। मामले में आरोपिया को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ धारा 34 (2) आबकारी एक्ट के तहत कार्यवाही की गई है।

नारायणपुर में विधायक सुश्री लता उसेण्डी ने फहराया तिरंगा

परेड की ली सलामी, मुख्यमंत्री के संदेश का किया वाचन

शहीदों के परिजन हुए सम्मानित

विकास कार्यों की झांकियां रहीं आकर्षण का केंद्र

रायपुर(समय दर्शन)। नारायणपुर जिले में गणतंत्र दिवस पूरे हर्षोल्लास और गरिमामय वातावरण में मनाया गया। मुख्य समारोह शासकीय उच्चतर माध्यमिक खेल मैदान में आयोजित हुआ। जहां विधानसभा क्षेत्र कोण्डागांव की विधायक सुश्री लता उसेण्डी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और परेड की सलामी ली। इस अवसर पर उन्होंने मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय का जनता के नाम संदेश का वाचन किया। गणतंत्र दिवस समारोह की परेड में 14 प्लाटून शामिल हुए, जिनमें शस्त्र सहित आईटीबीपी, छत्तीसगढ़ सशस्त्र बल, महिला पुलिस बल, और नगर सेना

(महिला) प्रमुख रहीं। शस्त्र रहित प्लाटून में रामकृष्ण मिशन विद्यापीठ के बैंड दल ने भाग लिया। परेड का नेतृत्व उप पुलिस अधीक्षक कुलदीप बंजारे और उप निरीक्षक संजय टोप्पो ने किया। समारोह में मुख्य अतिथि सुश्री लता उसेण्डी ने शहीदों के परिजनों से मुलाकात की और उन्हें शॉल व श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर जिले में उत्कृष्ट कार्य के लिए 74 अधिकारियों और कर्मचारियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर स्कूली बच्चों ने देशभक्ति और पारंपरिक नृत्यों पर आधारित आकर्षक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। जूनियर वर्ग में पीएमश्री मिडिल स्कूल पोर्टा केबिन देवगांव ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि द्वितीय स्थान पूर्व माध्यमिक शाला बंगलापारा एवं तृतीय स्थान आदित्य एकेडमी बचपन प्ले स्कूल को मिला। परीयना दिव्यांग आवासीय विद्यालय गरांजी को विशेष पुरस्कार दिया गया। सीनियर वर्ग में प्रथम स्थान कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय सुलेंगा, द्वितीय स्थान सेजेस महावीर चौक तथा तृतीय थान शासकीय बुनियादी कन्या शिक्षा परिसर गरांजी को मिला। मार्च पास्ट में प्रथम स्थान जिला पुलिस बल महिला, द्वितीय स्थान जिला पुलिस बल पुरूष तथा तृतीय स्थान 53वीं वाहिनी भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल को प्राप्त हुआ। जिला स्तरीय समारोह में 16 विभागों द्वारा अपनी योजनाओं और उपलब्धियों पर आधारित झांकियां निकाली गई, जिसमें नगर पालिका परिषद को प्रथम, पुलिस एवं जेल विभाग को द्वितीय तथा लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक नारायणप्रसाद साहू और परियोजना अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग प्रतिभा शर्मा ने किया। समारोह में कलेक्टर प्रतिष्ठा ममगाईं, पुलिस अधीक्षक प्रभात कुमार, जिला पंचायत सीईओ आकांक्षा शिक्षा खलखो सहित बड़ी संख्या में अधिकारी, जनप्रतिनिधि, शिक्षक और बड़ी संख्या में नागरिकगण उपस्थित थे।

संपादकीय

कश्मीर देश का मुकुट

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कश्मीर के गांदरबल जिले में 6.5 किमी. लंबी जेड मोड़ सुरंग का उद्घाटन करते हुए कहा कि %कश्मीर देश का मुकुट है, इसलिए मैं चाहता हूं कि यह ताज और सुंदर तथा समृद्ध हो।' उन्होंने आगे यह भी कहा, %मैं बस इतना चाहता हूं कि दूरियां अब मिट गई हैं, हमें मिल कर सपने देखना चाहिए, संकल्प लेना चाहिए और सफलता हासिल करनी चाहिए।' लेकिन इस अवसर पर जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला का दिया गया भाषण ज्यादा महत्त्वपूर्ण और प्रासंगिक है, जिसके अनेक निहितार्थ निकाले जा सकते हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि %पंद्रह दिन के अंदर पहले जम्मू को रेलवे डिवीजन और अब टनल, इन परियोजनाओं से न सिर्फ दिल की दूरी, बल्कि दिल्ली से दूरी भी कम हो जाती है।' प्रधानमंत्री मोदी के भाषण का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री उमर ने कहा, %मेरा दिल कहता है कि प्रधानमंत्री बहुत जल्द जम्मू-कश्मीर के लोगों को किया गया अपना तीसरा वादा भी पूरा करेंगे, जो राज्य का दर्जा बहाल करना है।' मुख्यमंत्री के भाषण से प्रतीत होता है कि उनका कांग्रेस नेता राहुल गांधी से मोहभंग हुआ है और उन्होंने अच्छी तरह से समझ लिया है कि अगर जम्मू-कश्मीर का विकास करना है और यहां व्यवस्थित सरकार चलानी है तो प्रधानमंत्री मोदी के सहयोग से ही चला सकते हैं, टकराव से नहीं। अगर मोदी का सहयोग मिलता रहेगा तो केंद्र का अनावश्यक हस्तक्षेप भी नहीं होगा। जाहिर है कि इस पर्वतीय प्रदेश में राज्य सरकार और केंद्र के बीच सहयोग से ही लोकतंत्र मजबूत होगा, शांति और स्थिरता आएगी। आतंकवाद और अलगाववाद परास्त होगा। किसी भी क्षेत्र के विकास के लिए ये आवश्यक शर्तें हैं। पिछले कुछ वर्षों के दौरान राज्य में आतंकी घटनाओं में उल्लेखनीय कमी आई है। संतोषजनक विकास भी हुआ है जिसके कारण पर्यटन उद्योग को बढ़ावा मिला है। राज्य के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने अपने भाषण के जरिए समझदारी का परिचय दिया है और अच्छी बात यह है कि यहां के मुसलमान भी अच्छी तरह समझने लगे हैं कि कश्मीर का भविष्य अस्थिर, अराजकताग्रस्त और आर्थिक रूप से संकटग्रस्त पाकिस्तान जैसे देश के साथ नहीं है, बल्कि भारत जैसे लोकतांत्रिक, स्थिर और आर्थिक रूप से मजबूत देश के साथ है। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला कश्मीरी अवाम की इसी सोच का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

लोकतंत्र को मजबूती देने के लिये मतदाता को जागना होगा

ललित गर्ग

भारत में राष्ट्रीय मतदाता दिवस प्रत्येक वर्ष 25 जनवरी को मनाया जाता है। विश्व में भारत जैसे सबसे बड़े लोकतंत्र में मतदान को लेकर कम होते रुझान को देखते हुए इस दिवस को मनाने की आवश्यकता महसूस हुई और पहली बार इसे वर्ष 2011 में मनाया गया। इसके मनाए जाने के पीछे निर्वाचन आयोग का उद्देश्य था कि देश अधिकतम मतदान को प्रोत्साहन दिया जाये। 'मतदाता बनने पर गर्व है, मतदान को तैयार हैं' जैसे नारों के साथ मतदान दिवस मनाने का मुख्य कारण है कि लोगों को मतदान का महत्व बताया जाए ताकि लोग इसके प्रति जागरूक हो और अपने मत का आवश्यकतरूप से उपयोग करते हुए सही उम्मीदवार को चुने। 15वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस-2025 की थीम है ''वोट जैसा कुछ नहीं, वोट जरूर डालेंगे हम।'' ऐसा करके ही लोकतंत्र को मजबूती दी जा सकती है। पिछले कुछ वर्षों में इसने मतदान के अधिकार के बारे में जागरूकता बढ़ाने और लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विशेषत: युवा मतदाताओं को पंजीकृत करने, उन्हें मताधिकार का उपयोग करने के लिये अग्रसर और प्रेरित करने में इस दिवस की महत्वपूर्ण भूमिका बनी है। चुनाव आयोग इस मंच का उपयोग स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों में योगदान देने वाले अधिकारियों, हितधारकों और संगठनों के प्रयासों को मान्यता देने के लिए भी करता है। यह लोकतांत्रिक मील का पत्थर बना है और भारत के लोकतंत्र के 78 वर्षों की यात्रा और चुनावी अखंडता के प्रति इसकी प्रतिबद्धता के लिये इसे जश्न रूप में मनाया जाता है।

किसी भी राष्ट्र के जीवन में चुनाव सबसे महत्त्वपूर्ण घटना होती है। यह एक यज्ञ होता है। लोकतंत्र प्रणाली का सबसे मजबूत पैर होता है। राष्ट्र के प्रत्येक वयस्क के संविधान प्रदत्त पवित्र मताधिकार प्रयोग का एक दिन। इसलिये इस दिन भारत के प्रत्येक नागरिक को अपने राष्ट्र के प्रत्येक चुनाव में भागीदारी की शपथ लेनी चाहिए, क्योंकि भारत के प्रत्येक व्यक्ति का वोट ही देश के भावी भविष्य की नींव रखता है और उन्नत राष्ट्र के निर्माण में भागीदारी निभाता है। सत्ता के सिंहासन पर अब कोई राजपुरोहित या राजगुरु नहीं बैठता अपितु जनता अपने हाथों से तिलक लगाकर नायक चुनती है। लेकिन जनता तिलक किसको लगाये, इसके लिये सब तरह के साम-दाम-दंड अपनाये जा रहे हैं। हर राजनीतिक दल अपने लोकलुभावन वायदों एवं घोषणाओं को ही गीता का सार व नीम की पत्ती बता रहे हैं, जो सब समस्याएं मिटा देगी तथा सब रोगों की दवा है। लेकिन ऐसा होता तो आजादी के अमृतकाल तक पहुंच जाने के बाद भी देश गरीबी, महंगाई, भ्रष्टाचार, अफसरशाही, बेरोजगारी, अशिक्षा, स्वास्थ्य समस्याओं से नहीं जुझता दिखाई देता। ऐसी स्थिति में मतदाता अगर बिना विवेक के आंख मूंदकर मत देगा तो परिणाम उस उक्ति को चरितार्थ करेगा कि 卐अगर अंधा अंधे को नेतृत्व देगा तो दोनों खाई में गिरेंगे।卐 इसलिये यह दिवस मतदाता को जागरूक करने के साथ प्रशिक्षित भी करता है।

भारतीय लोकतंत्र दुनिया का विशालतम लोकतंत्र है और समय के साथ परिपक्व भी हुआ है। बावजूद इसके लोकतंत्र अनेक विसंगतियों एवं विषमताओं का भी शिकार है। मुख्यत: चुनाव प्रक्रिया में अनेक छिद्र हैं, सबसे बड़े लोकतंत्र का सबसे बड़ा छिद्र चुनावों की निष्पक्षता एवं पारदर्शिता को लेकर है। खरीद-फरोख्त, नशा एवं मतदाताओं को लुभाने एवं आकर्षित करने का आरोप भी लोकतंत्र पर बड़े दाग हैं। चुनाव सुधारों की तरफ हम चाह कर भी बहुत तेजी से नहीं चल पा रहे हैं। चुनाव आयोग जैसी बड़ी और मजबूत संस्था की उपस्थिति के बाद भी चुनाव में धनबल, बाहूबल एवं सत्ताबल का प्रभाव कम होने के बजाए बढ़ता ही जा रहा है। ये तीनों ही हमारे प्रजातंत्र के सामने सबसे बड़ा संकट है। इन सब संकटों से मुक्ति के लिये मतदाता की जागरूकता की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। लोकतंत्र का सबसे महत्वपूर्ण पहलू चुनाव है, लोकतंत्र में स्वस्थ मूल्यों को बनाये रखने के साथ उसमें सभी मतदाताओं की सहभागिता को सुनिश्चित करना जरूरी है। इसके लिये चुनाव आयोग का आरईवीएम के प्रयोग का प्रस्ताव सैद्धांतिक तौर पर एक सराहनीय एवं जागरूक लोकतंत्र की निशानी है। क्योंकि आजादी के बाद से ही जितने भी चुनाव हुए है, उनमें लगभग आधे मतदाता अपने मत का उपयोग अनेक कारणों नहीं कर पा रहे हैं, ऐसा हर चुनाव में होता आया है। इसलिए लंबे समय से मांग उठती रही थी कि ऐसे लोगों के लिए मतदान का कोई व्यावहारिक एवं तकनीकी उपाय निकाला जाना चाहिए। उसी के मद्देनजर निर्वाचन आयोग के द्वारा घरेलू प्रवासियों के लिए आरवीएम का प्रस्ताव एक सूझबूझभरा एवं दूरगामी सोच एवं विवेक से जुड़ा उपक्रम है। जरूरत है राजनीतिक दल ऐसे अभिनव उपक्रम का विरोध करने या अवरोध खड़ा करने की बजाय उसका अच्छाइयों को स्वीकार करते हुए स्वागत करें। इनदिनों दिल्ली विधानसभा चुनाव की सरगर्मियां उग्रता पर है और इसमें मुफ्त की रेवडियां बांटने की होड़-सी लगी है। लोकतन्त्र में यह मुफ्त बांटने की मानसिकता एक तरह का राजशाही का अन्दाज ही कहा जायेगा जो लोकतंत्र के मूल्यों के विपरीत है। लोकतंत्र में कोई भी सरकार आम जनता की सरकार ही होती है और सरकारी खजाने में जो भी धन जमा होता है वह जनता से वसूले गये शुल्क या टैक्स अथवा राजस्व का ही होता है। राजशाही के विपरीत लोकतन्त्र में जनता के पास ही उसके एक वोट की ताकत के भरोसे सरकार बनाने की चाबी रहती है। दरअसल, जनता के हाथ की इस चाबी को अपने पक्ष में घुमाने एवं जीत का ताला खोलने के लिये यह मुफ्त की संस्कृति एक राजनीतिक विकृति के रूप में विकसित हो रही है। वृद्धों को मुफ्त धार्मिक यात्रा-पेंशन, युवाओं को रोजगार देने का वायदा, महिलाओं को नगद राशि एवं मुफ्त बस सफर हो या बिजली-पानी या गैस सिलेंडर। हालात यह हो गए है कि इस मामले में लगभग सभी पार्टियों के बीच एक होड़ जैसी लग गई है कि मुफ्त के वादे पर कैसे मतदाताओं से अपने पक्ष में लुभा कर मतदान कराया जा सके। इससे राज्यों का आर्थिक संतुलन लड़खड़ाता है या वे कर्ज में डूबती है तो इसकी चिन्ता किसी भी दल की सरकार को नहीं है। इस बड़े संकट से उबारने का काम मतदाता ही कर सकता है, वह बिना प्रलोभन, लोभ एवं मुफ्त की सुविधाओं के निष्पक्ष मतदान के लिये आगे आये।

राष्ट्रीय मतदाता दिवस से जुड़ा एक और महत्वपूर्ण विमर्शनीय विषय है लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ कराने का सुझाव, इसको लेकर एक सार्थक बहस छिड़ी हुई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दोनों चुनावों को एक साथ कराने का सुझाव दिया था। चुनाव एक साथ कराने का विचार बहुत नया हो, ऐसा भी नहीं है। पिछली सरकारों में भी समय-समय पर इस पर चर्चाएं होती रही हैं। लेकिन इस व्यवस्था को लागू करने को लेकर अनेक संवैधानिक समस्याएं भी और कुछ बुनियादी सवाल भी है। इन सबका समाधान करते हुए यदि हम यह व्यवस्था लागू कर सके तो यह सोने में सुहागा होगा। जनता की गाढी कमाई की बर्बादी को रोकने, बार-बार चुनाव प्रक्रिया के होने जनता को होने वाली परेशानी और प्रशासनिक कार्य में होने वाली असुविधाओं को रोकने के लिए चुनाव एक साथ कराने की व्यवस्था निश्चित रूप से लोकतंत्र को एक नई उष्मा एवं नया परिवेश देगी।

दिल्ली दंगों का दर्द फिर उभर

पंकज चतुर्वेदी

दिल्ली विधानसभा के लिए मतदान के लिए तैयार है, और पांच साल पहले भड़के उत्तर-पूर्वी दिल्ली के दंगों का दर्द फिर उभर आया है। दंगों की साजिश के आरोप में बहुत से लोग यूएपीए के तहत जेल में हैं, और उस मुकदमे का न्याय ठिठका हुआ है। वैसे पुलिस ने दंगे से जुड़े 758 मामले पंजीकृत किए थे। इनमें से एक स्पेशल सेल, 62 क्राइम ब्रांच और 695 उत्तर-पूर्वी दिल्ली के विभिन्न थानों में पंजीकृत हैं। मिली जानकारी के मुताबिक, पुलिस ने दंगों से जुड़ी कुल 758 एफआईआर दर्ज कीं। इनमें अभी तक 2619 लोगों की गिरफ्तारी हुई जिनमें से 2094 लोग जमानत पर हैं। अब तक सिर्फ 47 लोगों को दोषी पाया है, और 183 लोग बरी भी हो गए हैं। 75 लोगों के खिलाफ सबूत न होने के कारण कोर्ट ने उनका मामला रद्द कर दिया है। इतने वर्ष बीतने के बावजूद इनमें से अभी तक 268 मामलों में जांच पूरी नहीं हो पाई है।

जरा सोचें 1680 दिन बाद दंगे के कौन से साक्ष्य अब मिलेंगे? कुछ अर्जियां ऐसी भी हैं, जिन पर मामले दर्ज ही नहीं किए गए क्योंकि उनमें कुछ बड़े नाम थे। ऐसे भी मामले (57) जिनमें पुलिस के हाथ प्रमाण नहीं लगे और इन्हें बंद करने के लिए पुलिस ने अदालत से निवेदन किया है। ऐसे 43 मामलों की क्लोजर रिपोर्ट कोर्ट ने स्वीकार कर ली हैं जबकि 14 रिपोर्ट अभी विचाराधीन हैं। सच है कि दिल्ली में कानून-व्यवस्था का जिम्मा केंद्र सरकार का है, लेकिन न्याय और जेल राज्य सरकार के हाथों हैं। यह भी सामने आ चुका है कि दिल्ली हिंसा के पहले दिन ही अनेक जागरूक लोग मनीष सिसोदिया सहित आप के बड़े नेताओं के घर गए थे कि %हम सभी को तनावग्रस्त इलाके में चल कर लोगों को समझा कर शांत करना चाहिए' लेकिन इन नेताओं ने इससे इनकार कर दिया था। विदित हो दिल्ली में विधानसभा चुनाव के नतीजे के तत्काल बाद ही दंगे हो गए थे। इस आशय का पत्र और तथ्य अब चार्जशीट के हिस्से हैं।

दंगों के तत्काल बाद दिल्ली सरकार के दिल्ली अल्पसंख्यक आयोग ने नौ सदस्यीय कमेटी का गठन किया था। इसके चेयरमैन सुप्रीम कोर्ट के वकील एमआर शमशाद और गुरमिंदर सिंह मथारू, तहमीना अरोड़ा, तनवीर काजी, प्रो. हसीना हाशिया, अबु बकर सब्बाक, सलीम बेग, देविका प्रसाद तथा अदिति दत्ता सदस्य थे। इस जांच कमेटी ने दंगों में घोषित मुआवजे के लिए लिखे गए 700 प्रार्थनापत्रों का अध्ययन किया। अपने अध्ययन के बाद कमेटी ने पाया कि अधिकतर मामलों में क्षतिग्रस्त जगह का दौरा भी नहीं किया गया और जिन मामलों में जान-माल का नुकसान पाया गया, उनमें भी बहुत कम धनराशि, अंतरिम सहायता के रूप में दी गई। दंगों के तुरंत बाद कई लोग घर छोड़ कर चले गए। इसलिए बहुत से लोग मुआवजे के लिए आवेदन नहीं कर सके। मुआवजे में भी सरकारी अधिकारी के मरने पर उनके परिवार वालों को एक करोड़ की रकम दी गई जबकि एक आम नागरिक की मौत पर केवल 10 लाख रु पये का मुआवजा दिया गया। मुआवजे का कोई तार्किक आधार तय नहीं किया गया। इस रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली में कानून-व्यवस्था की जिम्मेदारी केंद्र सरकार की है, फिर भी दंगा पीड़ितों को केंद्र ने कोई मदद नहीं की। इस बात के लिए दिल्ली की आम आदमी पार्टी सरकार की भूमिका भी संदिग्ध है कि अप्रैल, 2020 में उत्तर-पूर्वी दिल्ली दंगा दावा आयोग (एनईडीआरसीसी) के गठन के बावजूद आज भी 2,790 दावे अनसुलझे हैं। वादे-दावे आगे चल कर सरकार बनाम उपराज्यपाल के झगड़े में फंस गए। 25 अगस्त, 2022 को उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने दावों के निपटान में तेजी लाने के लिए आयोग में 40 नये हानि मूल्यांकनकर्ताओं को नियुक्त किया। उन्हें नुकसान का आकलन कर रिपोर्ट दिल्ली उच्च न्यायालय में पेश करने के लिए कहा गया। एलजी सक्सेना ने मौजूदा 14 मूल्यांकनकर्ताओं को 25 अगस्त की तारीख से तीन सप्ताह के भीतर उन्हें सौंपे गए दावा निपटान पर अपनी रिपोर्ट जमा करने का भी निर्देश दिया।

भारत अंतिरक्ष में सैटेलाइट जोड़ने वाला विश्व का चौथा देश बना

रामस्वरूप रावतसरे

भारत ने वर्ष 2025 की शुरुआत के साथ ही अंतरिक्ष क्षेत्र में बड़ी सफलता हासिल की है। इसरो ने अंतरिक्ष में ही स्पेडेक्स मिशन के दो सैटेलाइट मॉड्यूल आपस में जोड़ लिए हैं। इस मिशन में 'डॉकिंग' की प्रक्रिया पूरी हो गई है। यह क्षमता हासिल करने वाला भारत विश्व का चौथा देश बन गया है। इस मिशन के लिए 30 दिसम्बर, 2024 को सैटेलाइट छोड़े गए थे और बाद में धीमे-धीमे इन सैटेलाइट को पास में लाकर जोड़ दिया गया। इसरो अब इसी मिशन के बाकी लक्ष्य पूरा करने के लिए कदम बढ़ाएगा। इसरो ने 16 जनवरी, 2025) को यह जानकारी देते हुए अपने ट्विटर पर लिखा, 卐स्पेस क्राफ्ट डॉकिंग सफलतापूर्वक पूरी हुई। यह एक ऐतिहासिक क्षण था। पहले 15 मीटर से 3 मीटर होल्ड पॉइंट तक पास लाया गया। डॉकिंग की शुरुआत सटीकता के साथ हुई, इसके बाद अंतरिक्ष यान को सफलतापूर्वक कैप्चर किया गया. डॉकिंग सफलतापूर्वक पूरी हुई। भारत अंतरिक्ष डॉकिंग को सफल बनाने वाला चौथा देश बन गया। पूरी टीम को बधाई! भारत को बधाई!' इसरो की इस सफलता पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बधाई दी है। उन्होंने एक्स (पहले ट्विटर) पर लिखा, 卐सैटेलाइट की अंतरिक्ष डॉकिंग में सफलता के लिए सफल प्रदर्शन के लिए इसरो के हमारे वैज्ञानिकों और पूरे समुदाय को बधाई। यह आने वाले वर्षों में भारत के महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष मिशनों के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।

इस मिशन की सफलता भारत को अंतरिक्ष में स्पेस स्टेशन बनाने, अपने अंतरिक्ष यात्री को भेजने और बाकी स्पेस मिशन पूरे करने में मदद करेगी। इसरो ने जो प्रक्रिया पूरी की है उसे डॉकिंग कहा जाता है। डॉकिंग से पहले दोनों सैटेलाइट मॉड्यूल अलग थे।

इसरो द्वारा लॉन्च किए गए मिशन में से एसडीएक्स-01 चेसर सैटेलाइट है जबकि एसडीएक्स -02 टार्गेट सैटेलाइट है। इसका मतलब है कि एसडीएक्स -01 कक्षा में स्थापित किए जाने के बाद एसडीएक्स -02 की तरफ बढ़ा और अंत में दोनों जुड़ गए। पीएसएलवी सी -60 रॉकेट ने इन्हें आपस में लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर छोड़ा था। इसके बाद इन्हें जोड़ने की प्रक्रिया चालू की गई। दोनों सैटेलाइट को जोड़ने की प्रक्रिया यानि डॉकिंग 7 जनवरी, 2025 को चालू की गई। इसके लिए सबसे पहले दोनों को 20 किलोमीटर की दूरी पर रोका गया था। इसके बाद टार्गेट सैटेलाइट एसडीएक्स-01 को स्टार्ट किया गया। 10 जनवरी, 2025 को यह दोनों 1.5 किलोमीटर पास लाए गए। 11 जनवरी को 225 मीटर पर लाए गए। 12 जनवरी को यह 100 मीटर पर आए। इस बाद इसरो ने इन्हें 15 मीटर और फिर 3 मीटर करीब लाया। दोनों को फिर वापस 15 मीटर पर ले जाया गया। इसके बाद 16 जनवरी, 2025 की सुबह दोनों मॉड्यूल आपस में जोड़ दिए गए। अब इन पर आगे और भी प्रयोग भी किए जाएँगे। अब सारे प्रयोग पूरे होने के बाद दोनों सैटेलाइट को अनडॉक यानी एक-दूसरे से अलग भी किया जाएगा। यह दोनों इसके बाद लगभग 2 साल तक अलग-अलग प्रयोग में काम आएँगे। एसडीएक्स - 01 सैटेलाइट पर छोटे कैमरे भी लगे हुए हैं। यह कैमरे इसके बाद तस्वीरें और वीडियो लेंगे। इसके अलावा भी इस पर कई सेंसर लगे हैं। यह सेंसर अंतरिक्ष में होने वाली गतिविधियों का पता लगाएँगे। इनमें से एक सेंसर रेडियेशन का स्तर भी मापेगा। इन सैटेलाइट को भारत में स्थित सैटेलाइट नियंत्रण सेंटर से नियंत्रित किया जाएगा। जानकारी के अनुसार इसरो ने सोमवार को रात 10 बजे श्रीहरिकोटा में स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से पीएसएलवी सी-60 रॉकेट लॉन्च किया था। इस रॉकेट पर कुल 24 सैटेलाइट लदे हुए थे। इनमें से सबसे प्रमुख दो सैटेलाइट थे, जिनकी डॉकिंग होनी थी। इसरो ने इन सैटेलाइट को सफलतापूर्वक अब अंतरिक्ष में ही जोड़ लिया। इनका नाम एसडीएक्स -01 और एसडीएक्स -02 था। इन दोनों का वजन 220 किलो है। यह दोनों सैटेलाइट अंतरिक्ष में पृथ्वी से 470 किलोमीटर की ऊँचाई और 55 अंश के कोण पर छोड़े गए थे। डॉकिंग को सरल भाषा में समझा जाए, तो यह दो सैटेलाइट (मॉड्यूल) को अंतरिक्ष में जोड़ने की प्रक्रिया को कहते हैं। यह कुछ-कुछ जमीन पर कोई पुल बनाने जैसा है। जिस तरह पुल के अलग-अलग हिस्से आपस में जोड़े जाते हैं, उसी तरह डॉकिंग में भी दो या उससे अधिक सैटेलाइट आपस में जोड़े जाते हैं। यह पूरी सरंचना किसी विशेष काम के लिए उपयोग होती है।

डॉकिंग का उपयोग वर्तमान में दो सैटेलाइट के बीच किन्हीं वस्तुओं के आदान प्रदान समेत बाक़ी काम के लिए होता है। अंतरिक्ष में स्थापित अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन भी इसी सिद्धांत पर काम करता है। इसका निर्माण भी डॉकिंग के जरिए हुआ था। इसमें सामान की आपूर्ति भी डॉकिंग के जरिए ही होती है। दरअसल, कई ऐसे सैटेलाइट या फिर मॉड्यूल होते हैं, जिन्हें एक बार में रॉकेट नहीं ले जा सकते। ऐसे में उन्हें अलग-अलग हिस्से में भेज कर अंतरिक्ष में जोड़ा जाता है। इसी तकनीक इसरो ने इस स्पेडेक्स मिशन(स्पेस डॉकिंग एक्सरसाइज) के जरिए हासिल किया है। जानकारी के अनुसार अब तक विश्व के तीन देश ही यह डॉकिंग की तकनीक हासिल कर सके थे। यह देश अमेरिका, रूस और चीन हैं। 16 जनवरी, 2025 को भारत भी इस लीग में शामिल हो गया है। इस तकनीकी तरक्की का फायदा इसरो को आगे के मिशन में मिलेगा। भारत ने अंतरिक्ष में अपना भी स्पेस स्टेशन बनाने का ऐलान किया है।

ट्रंप की व्यक्तिगत सोच और सामरिक नीति में गहरा अंतर

डॉ. ब्रह्मदीप अलूने

अमेरिकी विदेश नीति का एक प्रमुख उद्देश्य लोकतंत्र, मानवाधिकारों और कानून के शासन का प्रचार-प्रसार करना है। यह अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं और सहयोगियों के साथ काम करने के रूप में दिखाई देता है। ये लक्ष्य अमेरिकी विदेश नीति के केंद्रीय स्तंभों के रूप में कार्य करते हैं, और वैश्विक स्तर पर अमेरिका की भूमिका को आकार देते हैं लेकिन ट्रंप मूल्यों पर आधारित सहयोग की नीति को नकार कर अमेरिका की विदेश नीति को अधिक एकतरफा और संप्रभुतावादी बनाने की ओर देख रहे हैं। उनकी गृह और विदेश नीति में अलगाव का समान विचार नजर आता है। देश के भीतर वे सांविधानिक प्रावधानों के साथ अलगाव करने वाली जनता के साथ खड़े हैं, और उन्होंने केपिटल हिल के दंगाइयों को माफी दे दी है, वहीं वैदेशिक संबंधों को लेकर उनकी कूटनीति फायदों की तराजू को लेकर आगे बढ़ रही है। छह जनवरी, 2021 को एक अभूतपूर्व घटना घटी थी जब उनके समर्थकों ने अमेरिकी कैपिटल पर हमला किया था। ट्रंप ने कई बार इस हमले का समर्थन किया और भीड़ को उकसाया था। ट्रंप ने राजनीतिक हिंसा करने वाले लोगों को माफ करके लोकतंत्र की शांतिप्रिय तरीके से सत्ता हस्तांतरण की शांतप्रिय व्यवस्था पर मानो अविश्वास जता दिया है। अमेरिका का उद्देश्य वैश्विक व्यापार को बढ़ावा देना और अपने आर्थिक हितों की रक्षा करना है। यह मुक्त व्यापार समझौतों, व्यापार संबंधों और निवेश को बढ़ावा देने के माध्यम से होता है। ट्रंप इससे उलट व्यवहार कर रहे हैं। वे व्यापार समझौतों के पुनः मोल-भाव करने में विश्वास रखते थे। ट्रंप ने कई पुराने मुक्त व्यापार समझौतों को संशोधित या समाप्त करने की मंशा जाहिर कर दी है। ट्रंप बहुपक्षीय संस्थाओं और समझौतों की बजाय द्विपक्षीय संबंधों को प्राथमिकता देना चाहते हैं। ट्रंप ने पेरिस जलवायु परिवर्तन समझौते से बाहर निकलने का निर्णय लिया है, यह तर्क देते हुए कि यह समझौता अमेरिका की अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचाएगा और रोजगार में कमी करेगा। पेरिस जलवायु समझौता वैश्विक समझौता है, जो जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने और वैश्विक तापमान को बढने से रोकने के उद्देश्य से 2015 में पेरिस, फ्रांस में हुए संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में 195 देशों द्वारा हस्ताक्षरित किया गया था। पेरिस जलवायु समझौता ऐतिहासिक समझौता है, जो जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए वैश्विक प्रयासों को एकजुट करता है। हालांकि यह समझौता स्वैच्छिक है, और इसमें कानूनी बाध्यता नहीं है, फिर भी यह देशों को अपना उत्सर्जन कम करने और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने के लिए जिम्मेदार ठहराता है। इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि देशों द्वारा तय किए गए लक्ष्य कितने प्रभावी तरीके से लागू होते हैं, और क्या वे समय-समय पर अपने लक्ष्य बढ़ाने के लिए तैयार होते हैं। पेरिस समझौते के तहत देशों को अपने कार्बन उत्सर्जन में कमी करने की दिशा में काम करना होता है, जिससे ग्लोबल वार्मिंग को सीमित किया जा सके। इसके लिए दुनिया के प्रमुख कार्बन उत्सर्जक देशों, जैसे अमेरिका, चीन, भारत, यूरोपीय संघ आदि, को अपनी नीति के अनुसार उत्सर्जन में कमी लाने के उपाय करने होते हैं। अमेरिका इससे अलग हट कर अपनी वैश्विक जवाबदेही से हट रहा है, और ट्रंप को इससे परहेज नहीं है। ट्रंप ने संयुक्त राष्ट्र, नाटो, और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों को लेकर अपनी असहमति व्यक्त की। उनका मानना था कि ये संगठन अमेरिका के हितों के खिलाफ काम कर रहे हैं, और अमेरिका के योगदान को उचित नहीं मानते। नाटो और यूरोप के साथ अमेरिका के हित बहुत गहरे और विविध हैं, जो सुरक्षा, आर्थिक, राजनीतिक और सामरिक दृष्टिकोण से जुड़े हुए हैं। अमेरिका के लिए नाटो और यूरोप के साथ सहयोग और संबंध बनाए रखना महत्त्वपूर्ण है क्योंकि ये उसके वैश्विक रणनीतिक और सुरक्षा हितों के लिए अहम हैं। नाटो, और विशेष रूप से अमेरिका, यूरोप की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए रूस के खिलाफ मजबूत रक्षा स्थिति बनाए रखने का प्रयास करते हैं। ट्रंप पुतिन को सशक्त नेता मानते हैं। उन्होंने कई बार कहा है कि पुतिन मजबूत और सक्षम नेता हैं, जो अमेरिका के लिए लाभकारी हो सकते हैं। ट्रंप पुतिन से सीधे संवाद स्थापित करने पर बल देते हैं। ट्रंप की व्यक्तिगत सोच और अमेरिका की पारंपरिक रक्षा और सामरिक नीति में गहरा अंतर है। यह स्थिति अमेरिका की वैदेशिक नीति का संकट बढ़ा सकती है। अमेरिका के लिए भारत का महत्त्व कई स्तरों पर फैला हुआ है। भारत उसका बड़ा रणनीतिक, आर्थिक और राजनीतिक साझेदार है, जो अमेरिकी हितों को दक्षिण एशिया, एशिया-प्रशांत और वैश्विक स्तर पर मजबूत करता है। ट्रंप ने भारत के साथ व्यापार असंतुलन को लेकर चिंता जताई है। वे भारत पर शुल्क को कम करने का दबाव डाल सकते हैं। पिछले कार्यकाल में ट्रंप प्रशासन के तहत भारत और अमेरिका के बीच रक्षा सहयोग और सैन्य संबंधों में काफी वृद्धि हुई थी। दोनों देशों ने अधिक संयुक्त सैन्य अभ्यास किए और अमेरिका ने भारत को उच्चस्तरीय रक्षा प्रौद्योगिकी और उपकरणों की आपूर्ति की। ट्रंप प्रशासन ने 2019 में कश्मीर मुद्दे पर भारत के पक्ष में समर्थन दिया। ट्रंप ने पाकिस्तान के साथ भी संवाद को बढ़ावा दिया लेकिन भारत के साथ उनकी साझेदारी मजबूत रही। उन्होंने भारत के साथ अपने संबंधों को अहम रणनीतिक साझेदारी के रूप में देखा। भारत को उम्मीद है कि क्वॉड समिट में शामिल होने ट्रंप इस साल भारत आएंगे। ट्रंप इस बार अमेरिका फर्स्ट नीति को लेकर ज्यादा आक्रामक हैं। माना जा रहा है कि भारत को इमिग्रेशन और ट्रेड के मसले पर ट्रंप प्रशासन से चुनौती मिलेगी। ट्रंप प्रशासन भारत के साथ अपने संबंध कैसे आगे बढ़ाता है, इस पर भारत के साथ अमेरिकी हित भी निर्भर करेंगे। ट्रंप का विभिन्न देशों और वैश्विक संगठनों के प्रति अस्पष्ट रुख आशंकाएं बढ़ा सकता है। यह स्थिति अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा, क्वाड, पश्चिमी गठबंधनों और लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए चुनौतीपूर्ण है। विश्व से अलगाव रखने की ट्रंप की नीतियों के बूते अमेरिका के राष्ट्रीय हित कैसे पूरे होंगे, यह बड़ा सवाल है।

सृष्टि और संहार के अधिपति

भगवान शिव

ॐ नम: शिवाय

भगवान शिव को प्रसन्न करने के कई विधान शास्त्रों में वर्णित हैं। शिवरात्रि में की गई शिव की आराधना कई गुना फल प्रदान करती है और भोलेनाथ शीघ्र प्रसन्न होकर भक्तों पर असीम कृपा की वर्षा करते हैं...

शिव सदैव हमारी सभ्यता के मुख्य अंग रहे हैं। इनकी पूजा-आराधना सरल ही नहीं, स्टीक भी है। शिवत्व को जीवन में उतारना ही शिव की सच्ची आराधना है। जीवन के हर मोड़ पर, हर खुशी व हर दुख में शिव आत्मा रूप में हमारे हर कृत्य के साक्षी हैं। जिसने शिव को मना लिया, उसने सब-कुछ पा लिया। अपने कर्मो के सही चुनाव में भी शिव ही हमारी मदद करते हैं। तो आइए, महाशिवरात्री के पवित्र पर्व पर अपने जीवन में शिव से शिवत्व का वरदान मांगते हैं। शिव ऊर्जा, स्फूर्ति व तेज के परमधाम, शिवधाम व परम स्रोत हैं। इसी प्रकार हमें भी अपने जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार बनाए रखना चाहिए। निराशा को दूर कर आशा के दीप को तूफ़ानों में भी जला कर रखें। शिव ने विश्व व देवताओं के कल्याण के लिए हलाहल विष का पान किया था। हमें भी दूसरो की बुराइयों को अनदेखा कर, सब्र से काम लेना चाहिए। परिवार हो या काम, हर जगह जन-कल्याण के लिए त्याग की भावना ही हमें जीवन में आगे बढ़ाएगी। शिव निर्लेप हैं। वह सभी पदार्थों के उत्पत्ति कारक तो हैं, परंतु माया तथा भोग के क्षेत्र में वह परम योगी हैं। अपने जीवन में हमें इसी योग को अपनाना है। पदार्थों के भोग तथा माया से दूर रहकर हमें पदार्थों का सेवन करना है।

शिव के मस्तक पर अर्धचंद्र है

श्राप से ग्रस्त चंद्रमा पर दया करके शिव ने उसको अपने शीश पर धारण किया। शिव हमें सिखाते हैं कि समय-चक्र गतिशील है। जो कल बुरा था, वह आज सुधर भी सकता है। हमें अपने भूतकाल में स्वयं को फंसा कर नहीं रखना। निरंतर आगे बढ़ते रहना है। निरंतर चलते रहने का नाम जीवन है। चन्द्रमा समय का प्रतीक है।

शिव के हाथ में त्रिशूल उनकी तीन मूलभूत शक्तियों—इच्छा शक्ति, क्रिया शक्ति व ज्ञान शक्ति का प्रतीक है। बिना इच्छा शक्ति के हमारा जीवन लक्षयशून्य है। जब तक कुछ पाने की व कर दिखाने की इच्छा हमारे अंदर नहीं होगी, तब तक हम दिशाहीन भटकते हैं। क्रिया शक्ति कार्य पूर्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिव हमें सिखाते हैं कि केवल इच्छा नहीं, बल्कि कर्म करके अपने भविष्य को संवारने तथा सजाने का भी मौका भी हमें दिया जाता है। तीसरी शक्ति है ज्ञान। ज्ञान के बिना जीवन अधूरा है। किसी भी विद्या की प्राप्ति संपूर्ण लगन व निष्ठा का ही परिणाम है। जीवन में पढ़ाई, ज्ञान व विद्या अध्ययन का महत्व सर्वोपरि है।

बाघ की खाल

भगवान भोलेनाथ न तो मखमल के नरम मुलायम वस्त्र धारण करते हैं, न ही चमकते वस्त्र। वह शरीर पर बाघ की खाल धारण करते हैं। यह प्रतीक है नम्रता से सीधी, सच्ची, बिना दिखावे की जिंदगी जीने का। केवल कपड़ों से नहीं, व्यक्ति की असली पहचान उसके गुणों से होती है। उसका ज्ञान, उसकी विद्या, आचारव्यवहार तथा आंतरिक मजबूती ही उसकी असली पहचान है।

विभूति

शिव अपने शरीर पर सदैव विभूति रमाते हैं। उन्हें श्मशान की राख अच्छी लगती है। इस राख के श्रृंगार से शिव हमे बताते हैं कि मृत्यु शाश्वत है। जीवन का परम सत्य है- मृत्यु। एक दिन सभी को मृत्यु का ग्रास बनना है। अपने अंदर के मदन, अभिमान व नकारात्मकता का दहन कर ही शिव का सानिध्य प्राप्त किया जा सकता है। जहां शिव हैं, वहां सुंदरता है, सत्यता है, विश्वास है और कल्याण है। यही तो है— सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का रहस्य।

कन्या विवाह के लिए
हे गौरि शंकर अंर्धागिनी यथा त्वम् शंकर प्रिया तथा माम् कुरु
कल्याणि कान्त कान्ताम् सुदुर्लभाम्

पुत्र प्राप्ति के लिए
ह्री ॐ नम: शिवाय ह्रीं

विद्या प्राप्ति
ॐ ऐं वाग्देव्यै वरदायै ॐ नम:

लक्ष्मी प्राप्ति
ॐ ह्रीं कमले मोक्षं साधय ऐश्वर्यं देहि श्रीं ॐ नम:

स्वास्थ्य प्राप्ति
ॐ ह्रौं जूं स: ॐ त्रयम्बकं यजामहे
सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम्, ऊर्वारुकमिव बन्धनाम्
मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ स्व: भुव: भू:
ॐ स: जूं ह्रौं।

भोले को प्रिय बिल्वपत्र

शिवरात्रि के महापर्व पर शिव भक्त शिवलिंग को बिल्वपत्र अर्पण करना अपना धर्म समझते हैं। शिव पूजन की सामग्री में बिल्वपत्र सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। शिव जी आशुतोष हैं और वह अपने भक्तों पर शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। शिव रहस्य में वर्णन मिलता है कि 'ओ बिल्व, वृक्षों के राजा, तुम्हें प्रणाम। तुम भगवान शिव के भोग चढ़ाने का एक सशक्त माध्यम हो।'

बिल्वपत्र की उत्पत्ति के बारे में कहा जाता है कि इसकी उत्पत्ति लक्ष्मी के गहन तप से हुई थी। श्री सूक्त में लक्ष्मी जी को संबोधित करते हुए लिखा है— 'तुम सूर्य की लालिमा के समान हो। तुम्हारे तप के फलस्वरूप बिल्वपत्र का शुभ पौधा प्रस्फुटित हुआ तथा यह आपको बहुत ही प्रिय लगता है।' ऐसी मान्यता है कि बिल्व के फलों का इस्तेमाल कई तरह की बीमारियों को दूर करने के लिए भी किया जा सकता है।

बिल्वपत्र के पुंज में लक्ष्मी जी का निवास है। प्राचीन ग्रंथों में बिल्वपत्र की महानता का विवरण मिलता है। कहा जाता है कि भगवान विष्णु ने विश्व कल्याण के लिए शिवलिंग की आराधना की थी, जिसके फलस्वरूप लक्ष्मी जी की दाईं हथेली से बिल्व पौध प्रस्फटित हुई थी। शिव द्वारा विष्णु को समृद्धि एवं प्रसन्नता के लिए वरदान दिया गया। इसी कारण इस पौधे को श्री वृक्ष के नाम से भी जाना है।

शिव रहस्य में वर्णित है कि ऋषि याज्ञवलक्य राजा जनक को बिल्वपत्रों से भगवान शिव की आराधना से मिलने वाले पुण्यों के बारे में बताते हैं। उनके अनुसार किसी भी व्यक्ति की, जैसी भी मनोकामना हो, अगर वह श्रद्धा एवं दृढ़ निश्चय के साथ भक्तिपूर्वक भगवान शिव की बिल्वपत्रों से आराधना करे, उसकी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। भगवान शिव की आराधना के बारे में ऋषिवर कहते हैं कि जिस प्रकार अंधेरे को दूर करने के लिए सूर्य उदय होता है, उसी प्रकार पापों के बोझ से तब तक मुक्ति नहीं मिलती, जब तक भगवान शिव को बिल्वपत्र अर्पित न किए जाएं।

विभिन्न धार्मिक ग्रंथों में बताया गया है कि समस्त तीर्थ स्थान बिल्व वृक्ष की छाया में अवस्थित हैं। शिव स्कंद एवं लिंग पुराणों में बिल्वपत्र का वर्णन बहुत विस्तार से मिलता है। शिव पुराण में लिखा है कि जो व्यक्ति महादेव के लिंग रूप की बिल्व वृक्ष के नीचे बिल्वपत्रों से आराधना करता है, निश्चित रूप से निर्वाण प्राप्त करता है। शिव सिर्फ बिल्वपत्रों से की गई पूजा से ही प्रसन्न होते हैं।

बिल्वपत्र को शिवलिंग पर चढ़ाने का विशेष विधान है। शास्त्रों के अनुसार बिल्वपत्र को निषिद्ध काल में नहीं चढ़ाना चाहिए। चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी, अमावस्या तिथियों को नहीं चढ़ाना चाहिए। निषिद्ध समय में पहले दिन का रखा हुआ बिल्वपत्र चढ़ाना चाहिए। अगर नया पत्र न मिले, तो पहले चढ़ए हुए पत्रों को धोकर चढ़ाना भी शुभ है। बिल्वपत्र में छेद न हों और देखने में सुंदर हो। बिल्वपत्र को धोकर, उस पर चंदन का लेप करके इसे नीचे मुख करके चढ़ाना चाहिए।

झाड़ू छिपा कर रखिए

घर में साफ सफाई करने और उसे सुव्यवस्थित रखने के लिए प्रत्येक घर में झाड़ूऔर पोंछे का इस्तेमाल किया जाता है। ये दोनों वस्तुएं घर में प्रवेश करने वाली बुरी अथवा नकारात्मक ऊर्जाओं को नष्ट करने की प्रतीक भी हैं।

खुले स्थान पर झाड़ू रखना अपशकुन माना जाता है। इसलिए इसे छिपा कर रखें। भोजन कक्ष में झाड़ू भूल कर भी खुले स्थान में न रखें, क्योंकि यह अन्नऔर आय के साफ होने का प्रतीक है। यदि अपने घर के बाहर द्वारा के सामने झाड़ू उल्टी करके रखते हैं, तो यह घुसपैठियों से आपके घर की रक्षा करती है, पर यह कार्य केवल रात के समय किया जा सकता है। दिन के समय झाड़ू छिपा कर रखनी चाहिए ताकि किसी को नजर न आए।

फेंगशुई

सुखी-दाम्पत्य के सूत्र

फेंगशुई द्वारा हम जीवन को सुखी और समृद्धिशानी बना सकते हैं। निम्न उपाय अपना कर हम अपने दाम्पत्य जीवन में मिठास पैदा कर सकते हैं।

बैजरूम में दर्पण नहीं

आईनों से एक प्रकार की ऊर्जा बाहर निकलती है। यह ऊर्जा कितनी अच्छी या कितनी अधिक खराब हो सकती है यह इस बात पर निर्भर करता है कि आईना किस स्थान पर लगा हुआ है। शयन कक्ष में आईना लगाना वर्दित माना जाता है। पलंग के सामने आईना बिल्कुल नहीं होना चाहिए, क्योंकि इससे पति-पत्नी के वैवाहिक सम्बन्धों में भारी तनाव पैदा होता है। इसके कारण पति-पत्नी के अच्छे भले सम्बन्धों के बीच किसी तीसरे व्यक्ति का प्रवेश भी हो सकता है। आईनों का निषेधात्मक प्रभाव कम करने के लिए उन्हें ढक कर रखना चाहिए अथवा इन्हें अलमारियों के अंदर की ओर लगवाना चाहिए। पलंग पर सो रहे पति-पत्नी को प्रतिबिंबित करने वाला आईना तलाक तक का कारण बन सकता है। इसलिए रात्रि के समय आईना दृष्टि से ओझल होना चाहिए। छत में भी आईने नहीं लगे होने चाहिएं।

डबल बैड पर एक ही गद्दा हो

शयनकक्ष में पति-पत्नी का डबल बैड हमेशा एक ही गद्दे वाला होना चाहिए। एक ही बिस्तर पर दो गद्दे झगड़े, मन-मुटाव एवं तलाक का कारण बन सकते हैं।

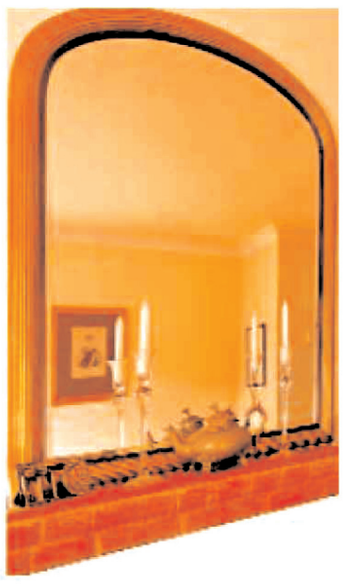

अलमारियां खुली न रखें

पुस्तकें यदि खुली अलमारी में रखी जाएं तो ये अशुभ ऊर्जा को उत्पन्न करती हैं, जो इस कमरे में रहने वाले व्यक्ति के लिए बहुत बुरी होती हैं। यह बुरी फेंगशुई होती है। इसलिए पुस्तकें हमेशा बंद अलमारी में रखें। अलमारी कभी भी खुली न छोड़ें, इससे उस कमरे में रहने वाला व्यक्ति बीमार पड़ सकता है।

प्रसन्नचिज़ मुद्रा वाला चित्र हो

घर में प्रत्येक सदस्य में पारस्परिक प्रेमपूर्वक संबंधों के लिए दक्षिण-पश्चिम कोने में परिवार के सदस्यों का चित्र लगाएं।

लाफिंग बुद्धा की मूर्ति लगाएं

घर में संपन्नता, आर्थिक समृद्ध लाने के लिए लाफिंग बुद्धा की मूर्ति लगानी चाहिए। इसे धन-दौलत के देवताओं में से एक माना जाता है।

शुभ प्रतीकों का प्रयोग

त्रिशूल, ॐ एवं स्वास्तिक का चिन्ह मांगलिक प्रतीक अत्यंत सौभाग्यशाली माने जाते हैं। ये घर के बाहर तथा बैठक एवं अन्य जगह लगाने चाहिएं।

फालतू वस्तुएं घर से हटाएं

पुराना टूटा-फूटा सामान, कबाड़, गंदगी, बर्तन अनावश्यक बाधा-विघ्न उत्पन्न करते हैं तथा प्रगति में रूकावट डालते हैं। अत: इसे घर में न रखें तथा घर में साफ-सफाई का ध्यान रखें।

स्फटिक की माला

स्फटिक एक रंगहीन, पारदर्शी, निर्मल और शीत प्रभाव प्रधान उपरत्न है। स्फटिक को कई नामों से जाना जाता है। जैसे सफेद बिल्लौर, रॉक क्रिस्टल, सितोपल, शिवप्रिय, कांचमणि, फिटक आदि। यह कांच जैसा प्रतीत होता है, परंतु यह कांच की अपेक्षा प्रभावान एवं दीर्घजीवी होता है। कटाई में कांच के मुकाबले इसमें कोण, अधिक उभरे सूच्याग्र होते हैं।

इसकी तासीर ठंडी होती है। अत: ज्वर, पित्त विकार,निर्बलता तथा रक्त विकार जैसी व्याधियों में वैद्यजन इसकी भस्मी का प्रयोग करते हैं। स्फटिक को नग के बजाय माला के रूप में पहना जाता है। स्फटिक माला को भगवती लक्ष्मी का रूप माना जाता है।

स्फटिक के उपयोग

- लक्ष्मी प्राप्ति के लिए इसे पूजा स्थल में रखें तथा इससे ॐश्री लक्ष्म्यै नम: मंत्र का जप प्रतिदिन करें। इसको धारण करने से आर्थिक संकट नहीं आता है।
- स्फटिक माला धारण कर किसी महत्वपूर्ण कार्य के लिए किसी से मिलने जाएं, तो कार्य में सफलता तथा विजय मिलती है।
- मंत्रसिद्ध स्फटिक माला को दुकान के गल्ले में रखें, तो आर्थिक उन्नति होने लगती है।
- स्फटिक को अंगूठी में न पहन कर माला के रूप में गले में धारण करने से आर्थिक तंगी तथा शत्रुओं से परेशानी में निजात मिलती है।

संक्षिप्त समाचार

कमला कालेज में मतदाता दिवस मनाया गया

राजनांदगांव। शासकीय कमला देवी राठी महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगांव में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आलोक मिश्रा के मार्गदर्शन एवं स्वीप नोडल अधिकारी अमरनाथ निषाद के संयोजन में राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्राओं को अपने देश की लोकतांत्रिक परंपराओं की मर्यादा को बनाये रखने तथा स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गरिमा को अक्षुण्ण बनाए रखते हुएए निर्भीक होकर धर्म, वर्ग, जाति, समुदाय, भाषा अथवा अन्य किसी भी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना सभी निर्वाचनो में अपने मताधिकार का प्रयोग करने की शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर महाविद्यालय के वरिष्ठ सहायक प्राध्यापक डॉ. ओमकारलाल श्रीवास्तव, डॉ. जयसिंह साहू, डॉ. रामकुमारी धुर्वा, डॉ. बसंत सोनबेर, संजय मिश्रा, श्रीमती तारा ठाकुर, समस्त अतिथि व्याख्याता एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

संस्कार सिटी कॉलेज ऑफ एजुकेशन में फ्रेशर पार्टी का आयोजन

राजनांदगांव। संस्कारधानी राजनांदगांव को शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी संस्कार सिटी कॉलेज ऑफ एजुकेशन, ठाकुरटोला, राजनंदगांव दिनांक 16.01.2025, दिन-गुरुवार को बीएड प्रथम सेमेस्टर के प्रशिक्षणार्थियों द्वारा महाविद्यालय में नवप्रवेशित बीएड प्रथम सेमेस्टर के प्रशिक्षणार्थियों हेतु महाविद्यालय के डायरेक्टर्स की अध्यक्षता एवं प्राचार्य डॉ. गुरप्रीत कौर छाबड़ा के मार्गदर्शन में फ्रेशर पार्टी का आयोजन किया गया। इस आयोजन के माध्यम से नवप्रवेशित प्रशिक्षणार्थियों को महाविद्यालय की संस्कृति एवं व्यचं के वातावरण में परिचय कराया गया। कार्यक्रम की शुरूवात प्रथम सेमेस्टर के प्रशिक्षणार्थियों के परिचय से हुई, इसके पश्चात् विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों का सिलसिला शुरू हुआ, जिसमें छात्रों ने रैम्प वौक, डॉस और म्जि में हिस्सा लिया। इन्हीं गतिविधियों के माध्यम से मिस नंदनी को फ्रेशर तथा को मिस्टर फ्रेशर धर्मेन्द्र के टाइटल से नवाजा गया। कार्यक्रम के समापन में महाविद्यालय के डायरेक्टर्स, प्राचार्य एवं समस्त सहायक प्राध्यापकों द्वारा नवप्रवेशित प्रशिक्षणार्थियों को आशीर्वाद एवं गत् दो वर्षों तक महाविद्यालय से प्रशिक्षण प्राप्त कर एक योग्य शिक्षक बनने की कामना की गई।

शासकीय विद्यालय महीदही में मनाया गया 76 वा गणतंत्र दिवस

साजा (समय दर्शन)। 26 जनवरी 2025 देश में 76 वां गणतंत्र दिवस मनाया गया। उसी कड़ी में प्राथमिक शाला और पूर्व माध्यमिक शाला महिदही में भी गणतंत्र दिवस हर्षोउल्लास के द्वारा मनाया गया जिसमें बच्चो के द्वारा देश भक्ति छतीसगढ़ सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यकम प्रस्तुत करते हुए पालको को मंत्र मुग्ध किया उक्त कार्यक्रम में शिक्षक गण,पालक गण व बच्चे उपस्थित हुए।

पिछले 7 दिनों में नगर निगम ने किया एक करोड़ रुपये से अधिक का टैक्स वसूली

कार्रवाही के डर से टैक्स जमा करने करदाता खुद पहुच रहे है निगम दफ्तर

दुर्ग (समय दर्शन)। नगर निगम का राजस्व वसूली का लक्ष्?य पूरा नहीं हो पाया है।नगर निगम को जलकर, संपत्ति कर, दुकान किराया, समेकित कर के रूप में पिछले 7 दिनों में निगम कार्यो फील्ड में रहकर एक करोड़ से अधिक टैक्स वसूलकर निगम कोष में जमा किया गया है।कलेक्टर/निगम प्रशासक सुश्री ऋचा प्रकाश चौधरी एवं आयुक्त सुमित अग्रवाल के निर्देश पर निगम से किराए पर दुकान लेकर समय पर किराया न पटाने वाले, जलकर का भुगतान हर माह नियमित रूप से न करने वाले तथा अन्य करों का भुगतान नहीं करने वालों के खिलाफ नगर निगम ने अभियान छेड़ दिया है। आयुक्त के निर्देश एवं राजस्व अधिकारी आरके बोरकर व सहायक राजस्व अधिकारी शुभम गोइर के मार्गदर्शन में राजस्व वसूली

टीम द्वारा नगर निगम क्षेत्र में इसी तरह अन्य करों की वसूली के लिए भी अभियान तेजी से चल रहा है।

नगर निगम के 60 वार्डों में नगर निगम को विभिन्न मदों से करो की प्राप्ति होती है। जिम्मेदार नागरिक समय पर अपने सभी प्रकार के कर का भुगतान नगर निगम को कर देते हैं, वहीं कुछ ऐसे भी नागरिक है जो निगम के कर का भुगतान समय पर नहीं करते। कई ऐसे बड़े बकायादारों एवं दुकानदार हैं जो कई सालों से दुकान का किराया नहीं जमा कर रहे हैं। नगर निगम ने अब ऐसे दुकानदारों के दुकानों के खिलाफ सख्त कार्रवाही करने की ठान ली है।कर दाता समय पर करें कर भुगतान नगर निगम के आयुक्त सुमित अग्रवाल ने की अपील,नहीं तो राजस्व वसूली टीम दे रही घरों में दस्तक,सख्ती के साथ दुकानों में सीलबंद की होगी कार्रवाही,राजस्व अधिकारी आरके बोरकर व सहायक राजस्व अधिकारी शुभम गोइर ने बताया कि करों की वसूली के लिए अभियान चलाया जा रहा है पूर्व में भी करों की वसूली के लिए अभियान चलाया गया था। बकायेदारों को पूर्व में ही सूचना दी जा चुकी है, लेकिन वह अब तक कर जमा करने नहीं आ रहे हैं।

दुकान किराया नहीं देने वाले दुकानदारों की दुकानों को फिर कार्रवाही करेगी।नल कनेक्शन काटने की भी कार्रवाई की जा रही है। अधिक लोगों के नल कनेक्शन काटे जा चुके हैं। नल काटने की कार्रवाई के बाद लोग जलकर की बकाया राशि जमा करने पहुंचे हैं।

कर वसूली के लिए चल रहा अभियान- नगर निगम के आयुक्त सुमित अग्रवाल ने बताया कि नगर निगम को जलकर, संपत्ति कर, दुकान किराया, समेकित कर के रूप में एक करोड़ से अधिक का कर वसूल किया गया है।उन्होंने बताया कि निगम में काउंटर खुल जाने से लोगो को ऐसी सुविधा की टैक्स जमा करने करदाता खुद पहुच रहे है।

सरपंच ने किया बेलतरा विद्यालय में न्योता भोज का आयोजन

साजा (समय दर्शन)। वि.ख. साजा जिला बेमेतरा में शासकीय प्राथमिक शाला , पूर्व माध्यमिक, एवम हाईस्कूल बेलतरा में प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण योजना के तहत पूर्ण न्योता भोज का आयोजन किया गया था। इस न्योता भोज का आयोजन ग्राम पंचायत बेलतरा के सरपंच श्रीमती बीना उमेंद साहू के द्वारा किया गया। इस अवसर पर 259 बच्चो को चावल दाल,खीर, पूड़ी, , आलू भाटा गोभी मटर की सब्जी, टमाटर चटनी एवं सलाद खिलाया गया ।इस न्योता भोज का ग्राम पंचायत बेलतरा सरपंच ऊमेद साहू, नेतराम साहू, दुधेराम, राजेश्वर लहरे, नोखेराम साहू ,प्रधान पाठक शिक्षक, शिक्षिका छात्र- छात्राए एस एम सी के अध्यक्ष , सफाई कर्मचारी, रसोईया सभी ने मिलकर न्योता भोज का

आनंद लिए ।इस अवसर पर संकुल समन्वयक बेलतरा श्री मनोज कुमार वर्मा ने बताया कि नयोता भोज से बच्चों में विभन्न पोषक तत्वों की पूर्ति होती है जिससे बच्चे शारीरिक और मानसिक रूप से मज़बूत होते है व समुदाय का बच्चों के प्रति अपनेपन की भावना जागृत होता है।सभी ने आयोजन कर्ता श्री सरपंच जी को धन्यवाद देकर आभार व्यक्त किये ।इस पुनित काम का ग्रामीण जन भूरि- भूरि प्रशंसा कर शुभकामनाएँ दिए।

पंचकुंडी श्री रुद्र महायज्ञ एवं संगीतमय श्रीराम कथा का समापन

थानखम्हरिया (समय दर्शन)। ।समीपस्थ ग्राम हाटरांका में विश्व शांति, सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाय के पावन उद्देश्य से आयोजित पंचकुंडी श्री रुद्र महायज्ञ एवं संगीतमय श्रीराम कथा का दिव्य और भव्य आयोजन सोमवार को विश्राम दिवस पर संपन्न हो गया। श्रद्धा और भक्ति के अद्भुत समागम में श्रद्धालुओं ने सात दिवसीय इस आध्यात्मिक आयोजन में भाग लेकर पुण्य लाभ अर्जित किया।

इस महायज्ञ में वेदों के ज्ञाता विद्वान पंडितों के साथ-साथ महायज्ञ संचालक प्रधानाचार्य पं. राजेंद्र प्रसाद तिवारी, उपाचार्य पं. दिवाकर प्रसाद तिवारी एवं ग्रामाचार्य पं. रमाकांत शर्मा जी का विशेष योगदान रहा। इनकी अगुवाई में यज्ञ के प्रत्येक अनुष्ठान को विधिपूर्वक संपन्न किया गया।

श्रीमधुर प्रवचन श्रृंखला में श्रद्धालुओं को जगद्गुरु विष्णुदेवाचार्य जी, प्रसिद्ध कथा वाचिका पूज्या रोशनी शास्त्री जी (श्रीधाम वृंदावन) एवं महामंडलेश्वर भगवान बापू के दिव्य वचनों का रसास्वादन प्राप्त हुआ। उन्होंने सात दिवसीय श्रीराम कथा के माध्यम से प्रभु श्रीराम के आदर्शों और जीवन मूल्यों को सहज और सरल भाषा में प्रस्तुत किया, जिससे भक्तों को आध्यात्मिक प्रेरणा मिली।

महायज्ञ में प्रतिदिन प्रभात फेरी, वेद पाठ, यज्ञ हवन एवं महाआरती का आयोजन भक्तों के लिए विशेष आनंददायक रहा। वहीं, धार्मिक आयोजन के साथ आयोजित मीना बाजार ने भी श्रद्धालुओं को भरपूर मनोरंजन और आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान की ।इस विशाल आयोजन में क्षेत्र के हजारों श्रद्धालु बड़ी संख्या में शामिल हुए और सेवा-सहयोग के माध्यम से अपना योगदान देकर आध्यात्मिक सुख एवं पुण्य लाभ प्राप्त किया।

रीन्यू ने कुम्भ में बांट कर 1 मिलियन कंबल बांट कर गिफ्ट वार्म्थ कैंपेन के10वें संस्करण का सफल समापन किया

नई दिल्ली: अग्रणी विकार्बोनीकरण समाधान कंपनी रीन्यू एनर्जी ग्लोबल पीएलसी ने अपने सालाना कैंपेन 'गिफ्ट वार्म्थ' के 10वेंसंस्करण को सफलतापूर्वक पूरा करने की घोषणा की है। रीन्यू ने 2015 में इस पहल की शुरूआत के बाद 1 मिलियन कंबल बांटने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को हासिल कर लिया है। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में चल रहे कुम्भ मे ले के दौरान कंबल का आखिरी बैच वितरित कर कंपनी ने यह ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। इस साल रीन्यू ने प्रमुख क्षेत्रों में 200,000 से अधिक कंबल बांटें, जिसमेंछत्तीसगढ़, राजस्थान, उत्तराखण्ड, एनसीआर, मध्य प्रदेश, और गुजरातशामिल हैं। छत्तीसगढ़ के रायपुर में उपमुख्यमंत्री माननीय श्री विजय शर्मा नेकम्बल बाँट कर लोगों को सम्बोधित किया। हाल ही में कुम्भ मेले के दौरान23 जनवरी को उत्तर प्रदेश सरकार में ओद्यौगिक विकास, निर्यात संवर्धन, एनआरआई एवं

निवेश संवर्धन मंत्री नंद गोपाल गुप्ता के हाथों कंबलबंटवाकर कंपनी एक मिलियन के ऐतिहासिक आंकड़े तक पहुंच गई है। यहउपलब्धि तेज़ सर्दी के मौसम में संवेदनशील समुदायों को सहयोग प्रदानकरने की रीन्यू की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इस साल के कैंपेन में कंबल वितरण अभियान के दौरान कई गणमान्यदिग्गज मौजूद रहे, जिनमें शामिल थे- रूद्रप्रयाग में उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्रीश्री पुष्कर सिंह धामी; रायपुर में छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा; उज्जैन और रतलाम में मध्य प्रदेश के केबिनेट मंत्री श्री इंदर सिंह परमार।इनकी भागीदारी सर्दियों के महीनों में ज़रूरतमंद समुदायों को सहयोग प्रदानकरने की साझा प्रतिबद्धता को इंगित करती है। पिछले दस सालों में 'गिफ्ट वार्म्थ' पहल ने अनेक ज़रूरतमंद लोगों के जीवनपर सकारात्मक प्रभाव डाला है, जिन्हें जलवायु परिवर्तन के चलते गंभीर सर्दीकी समस्या से जूझना पड़ता है। स्थानीय अधिकारियों के साथ मिलकर कामकरते हुए रीन्यू ने उन लोगों एवं समुदायों को पहचान कर सहयोग प्रदानकिया, जो शीत लहर से सबसे ज़्यादा प्रभावित हैं, और दूर-दराज के इलाकोंमें आश्रय स्थलों तक अपनी पहुंच को बढ़ाया है। अकेले इस साल में कंबलवितरण अभियान ने ज़िला, तहसील एवं ग्रामीण स्तर पर पहुंच कर असंख्यलोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव किया है।

घरौंदा के नये भवन का लोकार्पण, कलेक्टर ने फ़ीता काटकर सौंपा लाभार्थीयो को

बिलासपुर (समय दर्शन)। घरौंदा परियोजना के पुरुष आश्रय भवन का लोकार्पण आज कलेक्टर बिलासपुर द्वारा किया गया। शासकीय अनुदान प्राप्त घरौंदा परियोजना का यह आवासीय भवन अंधमुक, बधिर शाला परिसर में है।

सुबह 10:00 बजे कलेक्टर अवनीश शरण और नगर पालिक निगम आयुक्त अमित कुमार ने फीता काटकर भवन को घरौंदा परियोजना के लिए यह आवासीय भवन 25 हितग्राहियों के लिए पूर्ण सुविधा के साथ संयुक्त संचालक समाज कल्याण की निगरानी में तैयार हुआ। लोकार्पण के बाद कलेक्टर और निगम आयुक्त ने पूरे भवन का निरीक्षण किया विशेष कर रसोई,

फिजियोथैरेपी और प्रसाधन की सुविधाओं पर ध्यान दिया। लाभार्थी यो से भोजन, वस्त्र संबंध में पूछा भी कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन के बाद कलेक्टर और अन्य मेहमानों का संस्था की ओर से पुष्प गुच्छ देकर स्वागत भी किया गया। कार्यक्रम में संयुक्त संचालक श्रद्धा पी मैथ्यू, विकास सेवा समिति के पदाधिकारी अंशु गौड़, रुमी दुबे, अमित, ज्योति भूषण के साथ घरौंदा का स्टॉप सोमेश, भूपेंद्र, अनुपमा, रिया, पराग, माया सहित सभी कर्मचारी उपस्थित थे।

उप-मुख्यमंत्री अरुण साव लोरमी के प्रत्याशियों के सेनापति बन नामांकन रैली में हुए शामिल

लोरमी नगर पालिका में विकास और विश्वास की होगी जीत, बनेगी ट्रिपल इंजन की सरकार : उप-मुख्यमंत्री अरुण साव

लोरमी की नामांकन रैली में उमड़ा जनसैलाब और भाजपा जिंदाबाद की गूंज, सुजीत की जीत का शंखनाद : उप-मुख्यमंत्री

लोरमी नगर पालिका में खिलाएं 19 कमल, सामान्य कार्यकर्ता भाजपा प्रत्याशी सुजीत वर्मा को बनाएं अध्यक्ष : उप-मुख्यमंत्री

मुंगेली (समय दर्शन) उप-मुख्यमंत्री अरुण साव फव्वारा चौक लोरमी से तहसील कार्यालय तक नगर पालिका अध्यक्ष पद के लोकप्रिय प्रत्याशी सुजीत वर्मा जी एवं लोरमी के जुझारू पार्षद प्रत्याशियों के साथ विशाल नामांकन रैली में सेनापति के रूप में सम्मिलित हुए द्य श्री साव ने कहा कि, नामांकन रैली में हमारे लोकप्रिय प्रत्याशियों के समर्थन में उमड़ा भारी जनसैलाब एवं भाजपा जिंदाबाद का नारा, 卐सुजीत की जीत卐 का शंखनाद है साव ने नामांकन रैली को संबोधित करते

हुए कहा कि, इस रैली में जनसैलाब उमड़ा है। आप लोगों ने भारी संख्या में उपस्थित होकर प्रत्याशियों को प्रचंड जीत का आशीर्वाद प्रदान किया है। ये जनसैलाब बताता है कि पूरा लोरमी नामांकन रैली में शामिल हुआ है। उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने अपील करते हुए कहा कि, आप नगर वासियों से 18 वार्ड और पालिका अध्यक्ष के रूप में 1 कुल 19 कमल मांग रहा हूं। लोरमी की जनता यहां से 19 कमल जीतकर दे, हम सब मिलकर लोरमी का विकास करेंगे। एक साल में ही लोरमी की तस्वीर बदल गई है। अभी तो शुरुआत हुई है, आगे और बड़े विकास के काम होंगे।

साव ने कहा कि, भाजपा ने एक सामान्य कार्यकर्ता सुजीत वर्मा को अध्यक्ष पद का प्रत्याशी बनाया है। जो लगातार सक्रिय है। वे दो बार के पार्षद हैं, बेदाग छवि है। सज्जन, सरल, सहज, सौम्य छवि के उम्मीदवार हैं। आप सुजीत वर्मा के रूप में शासक नहीं सेवक चुनिए। ऐसे ही 18 पार्षद प्रत्याशी चुनाव के मैदान में उतारे हैं भाजपा ने। आप कमल का बटन दबाएंगे, तो कमल छाप वाले लोरमी के विकास के तेज गति से आगे बढ़ाएंगे।

विकास और विश्वास की होगी जीत- लोरमी तहसील कार्यालय में भाजपा के लोकप्रिय, शिक्षित नगर पालिका अध्यक्ष पद के प्रत्याशी सुजीत वर्मा एवं जुझारू पार्षद प्रत्याशियों ने निर्वाचन अधिकारी के समक्ष नामांकन पत्र दाखिल किया। नामांकन के बाद डिप्टी सीएम अरुण साव ने पूर्ण विश्वास जताते हुए कहा कि नगर पालिका में कमल खिलेगा एवं विकास की गति और तेज होगी। लोरमी एक बार फिर विकास और विश्वास की जीत होगी।

विजय का आशीर्वाद लिया- उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने लोरमी नगर पालिका अध्यक्ष पद के प्रत्याशी सुजीत वर्मा एवं पार्षद प्रत्याशियों के साथ नगर के ठाकुर देव मंदिर में पूजा-अर्चना की। नगर पालिका लोरमी के सभी उम्मीदवारों के विजय का आशीर्वाद लिया एवं लोरमी के आत्मीय जनों की सुख-समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की।

पार्षद पद के लिए भाजपा प्रत्याशी मैदान पर- आरती ध्रुव, लक्ष्मी साहू, श्रीमती दुर्गेश पाण्डेय,आलोक शिवहरे जी, डॉ अशोक जायसवाल, विश्वास दुबे, रवि शुक्ला, संतोष राम निषाद, पुष्पा देवी यादव, धारणी देवी राजपूत, संगीता ध्रुव, बादल मौर्य, राजेंद्र सलूजा, सोहन डड़सेना,सुनिल कुमार अहिरवार, रंजीता भास्कर, शिवशंकर यादव, पूर्णिमा यादव

नामांकन के दौरान जिला अध्यक्ष दीनानाथ केशरवानी, किशोर राय , कोमल गिरी गोस्वामी , गुरमीत सलूजा , वर्षा सिंह, विक्रम सिंह, विनय साहू, लेखराज सिंह, धनीराम यादव, प्रदीप मिश्रा, रामेश्वर बंजारे, अजय दास, गणेश शर्मा, दिनेश कश्यप, अशोक साहू, अशोक जायसवाल, राकेश छाबड़ा, रवि शर्मा, सुशील यादव, राजेंद्र साहू, अर्जुन राजपूत, अंजना देवी दास, सावित्री राजपूत ,दुष्यंत खत्री, हितेश सापरिया, मुकेश सापरिया, विनोद राजपूत सहित देवतुल्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

खबर-खास

भाजपा ने युवा समाजसेवी सूरज सिन्हा को पार्षद प्रत्याशी बनाया

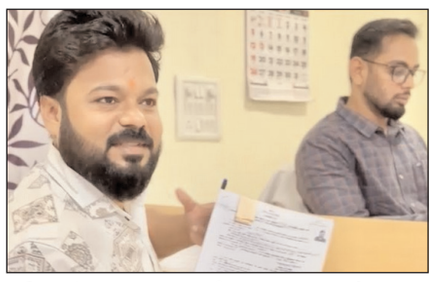

गरियाबंद (समय दर्शन)। भाजपा ने नगर पालिका चुनाव में युवा समाज सेवी,आर्टिस्ट और सामाजिक कार्यकर्ता सूरज सिन्हा को पार्षद प्रत्याशी के रूप में उतारकर न केवल युवा शक्ति को बल दिया है,बल्कि जनता के बीच विश्वास और विकास का संदेश भी दिया है।सूरज सिन्हा की कला को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी,अभिनेता अमिताभ बच्चन और बाघेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री जैसे प्रमुख व्यक्तित्वों ने सराहा है।वहीं,उनकी समाज सेवा में सक्रियता भी काबिल-ए-तारीफ है।उन्होंने जरूरतमंदों,बुजुर्गों और दिव्यांगों की मदद करने में हमेशा अग्रणी भूमिका निभाई है। सूरज सिन्हा ने कहा,"मेरा एक ही लक्ष्य है शहर की जनता को किसी भी प्रकार की तकलीफन हो, विशेष रूप से बुजुर्गों और जरूरतमंदों को किसी काम के लिए भटकना न पड़े। मैं उनके साथ हूं, और इसके लिए मैं अपना फोन नंबर भी उन्हें दे सकता हूं। मेरा उद्देश्य है कि जनता का विश्वास जीत कर, पीएम मोदी और सीएम साय विधायक रोहित साहू के विकास के सपनों को साकार करूं। वही विधायक रोहित साहू ने कहा, कांग्रेस और अन्य दलों की तुलना में भाजपा हमेशा जनता की उम्मीदों पर खरा उतरी है। सूरज सिन्हा में युवा जोश और समाज सेवा की भावना है, जो भाजपा के विकास के लक्ष्यों के साथ मेल खाती है। हम सभी मिलकर गरियाबंद में भाजपा का परचम लहराएंगे और एक बार फिर पीएम मोदी और सीएम साय के नेतृत्व में विकास की नई दिशा देंगे।भा.ज.पा. का मिशन हर आखिरी व्यक्ति तक विकास की योजनाओं का लाभ पहुंचाना!

गरियाबंद जिले में फिंगरप्रिंट प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल आयोजन

गरियाबंद (समय दर्शन)। 28 जनवरी को पुलिस अधीक्षक की दिशा निर्देश एवं मार्गदर्शन में गरियाबंद जिले में फिंगरप्रिंट तकनीक के उपयोग एवं अपराधों के निराकरण में इसकी भूमिका को मजबूत करने हेतु गरियाबंद जिले के समस्त अधिकारी/कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।इस कार्यक्रम में जिले के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (नक्सल) धीरेंद्र पटेल व सभी थाना प्रभारी एवं विवेचना अधिकारी व संबंधित कर्मचारी उपस्थित रहे।कार्यक्रम का उद्देश्य जिले के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को फिंगरप्रिंट तकनीक के नवीनतम विकास के बारे में जानकारी देना और अपराध स्थल पर प्राप्त फिंगरप्रिंटों का वैज्ञानिक तरीके से विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करना था। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट राकेश नरवरे द्वारा फिंगरप्रिंट लेने, संरक्षित करने ,घटना को सुरक्षित कैसे रखें आरोपी/मृतक व्यक्ति का फिंगरप्रिंट लेने संबंधी नेफिस सिस्टम,चांस प्रिंट उबरना और डेटाबेस में संग्रहित करने की विधि के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ने अपने संबोधन में कहा कि फिंगरप्रिंट तकनीक अपराधों का खुलासा करने में एक महत्वपूर्ण साधन है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से पुलिस अधिकारियों को अपराधियों को पकड़ने में मदद मिलेगी। उन्होंने सभी अधिकारियों को इस प्रशिक्षण का अधिकतम लाभ उठाने का आह्वान किया।

जाबो कार्यक्रम अंतर्गत मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

गरियाबंद। नगरीय निकाय एवं त्रिस्तरीय पंचायत निर्वाचन के अंतर्गत लोगों को मतदान के प्रति जागरूक करने विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसी के तहत विगत दिवस जाबो कार्यक्रम अंतर्गत जनपद पंचायत गरियाबंद के ग्राम पंचायत कोचवाय में जागव वोटर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में स्व सहायता समूह सदस्यों ने मतदाताओं को जागरूक करने कलश यात्रा निकाली।महिलाओं ने जागरूकता रैली निकालकर लोगों से मतदान करने की अपील की। साथ ही ग्रामीणों को अपने मताधिकार का उपयोग करने शपथ दिलाया।

भाजपा कांग्रेस प्रत्याशी ने भरा नामांकन, दिखाए जनाधार, किए शक्ति प्रदर्शन

गरियाबंद (समय दर्शन)। नगरपालिका चुनाव के लिए नामांकन भरने के अंतिम दिन मंगलवार को दोनों राष्ट्रीय पार्टी कांग्रेस बीजेपी के निर्दलीय प्रत्याशियों ने नाम दाखिल के बहाने शक्ति प्रदर्शन कर अपना जनाधार बताने की कोशिश किए।नपा अध्यक्ष के रूप में बीजेपी के प्रत्याशी रिखी राम यादव के द्वारा नामांकन के पूर्व स्थानीय शिव मंदिर के सामने हाथ में झंडा लिए बड़े पैमाने भीड़ इकट्ठा थी जिन्होंने कार ऑटो मोटरसाइकल के साथ पैदल रूप में रैली के साथ कलेक्ट्रेट भवन पहुंचकर अपना नामांकन दाखिल किए,इस बीच बीजेपी के प्रत्याशी बड़ी गाड़ी थार में ऊपर खड़ा होकर लोगो को समर्थन मांगते और हाथ हिलाते रहे।वही कांग्रेस के प्रत्याशी गेंदालाल सिंहा अपनी भीड़ जिला कांग्रेस भवन में रखे थे जहां से वे ऑटो, मोटरसाइकिल के साथ पैदल मार्च करते हुए कलेक्ट्रेट भवन पहुंचकर नामांकन दाखिल किए,इस बीच देखा गया कि बीजेपी के प्रत्याशी बड़ी कार में खडाकर हाथ हिला रहे थे,वही कांग्रेस के दावेदार पैदल चलकर हर दुकान और हर व्यक्ति के साथ मिलकर उनका समर्थन मांग रहे थे,जिससे लोग उनके प्रति आकर्षित होते दिखे।

नगरपालिका चुनाव को लेकर गरियाबंद में राजनीतिक सरगर्मी चरम पर है।भाजपा प्रत्याशी रिखी राम यादव ने आज भारी जनसमर्थन के साथ नामांकन दाखिल किया।इस दौरान उन्होंने जनता को संबोधित करते हुए कहा आप सभी मुझे बचपन से जानते हैं।मैंने अपना पूरा जीवन जनता की सेवा में समर्पित किया है। इस बार भाजपा ने मुझ पर भरोसा जताकर सेवा का अवसर दिया है,जिसे मैं पूरी निष्ठा से निभाऊंगा।

वही विधायक रोहित साहू ने भरी हुंकार भरते हुए कहा कि कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में देश और प्रदेश में ऐतिहासिक विकास हो रहा है।भाजपा की जनकल्याणकारी योजनाओं से जनता को सीधा लाभ मिल रहा है,और यही कारण है कि इस चुनाव में जनता भाजपा पर ही भरोसा जताएगी।साथ ही पूर्व अध्यक्ष गफ्फूमेमन ने दावा करते हुए कहा कि भाजपा की 'ट्रिपल इंजन सरकार' से दोगुना विकास होगा।पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष ने भाजपा की जीत को लेकर बड़ा दावा करते हुए कहा

गरियाबंद में भाजपा की सरकार बनने से विकास को नई गति मिलेगी।प्रदेश और केंद्र में पहले से भाजपा की सरकार है,और अब नगर पालिका में भी भाजपा का बोर्ड बनेगा,जिससे 'ट्रिपल इंजन सरकार' का फायदा सीधे जनता को मिलेगा। विकास कार्यों की गति दोगुनी होगी और शहर को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया जाएगा।

शक्ति प्रदर्शन से माहौल हुआ गर्म- कांग्रेस व भाजपा प्रत्याशी के नामांकन के दौरान कार्यकर्ताओं में जबरदस्त जोश देखा गया।ढोल-नगाड़ों की गूंज के बीच कार्यकर्ता भाजपा के झंडे लहराते हुए कलेक्ट्रेट पहुंचे।रैली में भाजपा के वरिष्ठ नेताओं,पार्षद प्रत्याशियों और कार्यकर्ताओं की भारी भीड़ उमड़ी,वही कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष दावेदार के साथ कुछ चिन्हित पार्षद प्रत्याशी ही नजर आए जबकि कुछ कांग्रेस के नेता कहे जाने वालो के साथ पार्षद प्रत्याशी भी नजर नहीं आए,जिससे कई प्रकार का अंदेशा लगाया जा रहा है।

निर्दलीय बन सकते है दोनों पार्टी के लिए रोड़ा,,,एक तरफकांग्रेस पार्टी में जुड़े कुछ वर्ष पुराने सदस्य को कांग्रेस पार्षद के दावेदारों के साथ दूसरे पार्टी के नपा अध्यक्ष के साथ दूसरे दूसरे वार्ड में बैठक करते देखे जाने की चर्चा नगर में जोरो पर है,ऐसे में कांग्रेस पार्टी को भीतरीघात का डर सता रही है।वही नगर में भाजपा को एक बड़ा झटका देते हुए वर्षों से बीजेपी समर्थक रहे नगर के जानेमाने माने वकील के द्वारा निर्दलीय अध्यक्ष का फार्म जमा करने से बीजेपी भी संकट में आते दिख रहा है।टिकट कटने से नाराज अधिवक्ता प्रशांत मानिकपुरी ने निर्दलीय नामांकन जमा कर समीकरण ही बिगाड़ दिया है जिससे नगरपालिका चुनाव से पहले गरियाबंद की राजनीति में बड़ा उलटफेर हो गया है।भाजपा ने पहले अधिवक्ता प्रशांत मानिकपुरी को अध्यक्ष पद का प्रत्याशी घोषित किया था,लेकिन 24 घंटे के भीतर ही उनका टिकट काटकर रिखी राम यादव को उम्मीदवार बना दिया गया।अब इस फैसले का भारी विरोध सामने आ रहा है,क्योंकि प्रशांत मानिकपुरी ने आज निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में नामांकन पत्र जमा किया।इससे भाजपा के लिए सबसे बड़ा संकट तो होगा लेकिन कांग्रेस को इससे सीधा फायदा मिलेगा?

निर्दलीय नामांकन जमा होने के साथ भाजपा के अंदर आंतरिक घमासान से सियासी हलचल तेज हो गई है।अब बड़ा सवाल यह है कि क्या पार्टी प्रशांत मानिकपुरी को मना पाएगी या वे चुनावी मैदान में डटे रहेंगे?अगर प्रशांत निर्दलीय के रूप में मुकाबले में उतरते हैं,तो भाजपा के लिए यह सबसे बड़ी चुनौती साबित हो सकती है,जिससे कांग्रेस को सीधा फायदा मिलेगा।

बॉक्स में,,,,,,,आज हुए नामांकन रैली में दोनों पार्टी द्वारा भीड़ तो बहुत ज्यादा जुटाया गया लेकिन इस रैली को माध्यम से कई लोगों की रोजी चल गई।देखा गया कि इस भीड़ में कई लोगों को मालूम ही नहीं था कि वे बीजेपी से आए है या कांग्रेस के ? उनसे पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि दो सौ रुपए रोजी में हमे लाया गया है।

राष्ट्रपति के न्यौता में दिल्ली पहुंचे जिले के बैगा परिवार गणतन्त्र दिवस समारोह में शामिल हुए

राष्ट्रपति महामहिम द्रौपती मुर्मू ने सभी लोगों का अभिनंदन किया

कवर्धा (समय दर्शन)। जिले के लिए 76वां गणतंत्र दिवस एक ऐतिहासिक और गौरवपूर्ण अवसर लेकर आया। जिले के बैगा बाहुल्य कुकदूर तहसील क्षेत्र के कांदावानी और तेलियापानी गांव के छह बैगा सदस्यों और ग्राम पंचायत कोटरा बुंदेली को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया।

महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा समुदाय के छह सदस्यों और ग्राम पंचायत कोटरा बुंदेली को 26 जनवरी 2025 को सम्मानित किया। विशेष आमंत्रण पर दिल्ली पहुँचे इन परिवारों में ग्राम पंचायत कांदावानी के आश्रित ग्राम पटपरी की श्रीमती जगतिन बाई बैगा और उनके पति फूल सिंह बैगा, ग्राम तेलियापानी की श्रीमती तीतरी बाई बैगा और पति बुध सिंह बैगा, तथा ग्राम तेलियापानी की ही श्रीमती बाली बाई बैगा और पति सोनू राम बैगा शामिल थे।

कबीरधाम जिले के विशेष पिछडी जनजाति बैगा परिवार के सदस्यों ने दिल्ली में देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह,सहित अन्य केंद्रीय मंत्रियों से भेंट की और उनके साथ संयुक्त फ़ोटो ग्राफ़ी की।

श्रीमती जगतिन बाई बैगा ने राष्ट्रपति से विशेष चर्चा करते हुए अपने गांव की प्रगति की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री जनमन योजना के माध्यम से उनके गांव में पहली बार सौर ऊर्जा से बिजली पहुंची, जिससे उनका जीवन बदल गया।

दिल्ली जाने और राष्ट्रपति से मिलने का अवसर पाकर बैगा परिवारों में उत्साह और गर्व का माहौल है। श्रीमती जगतिन बाई बैगा ने भावुक होकर कहा कि यह सपना सच होने जैसा है। पहले हमारे गांव में अंधेरा था, लेकिन अब सौर ऊर्जा से रोशनी आई है। राष्ट्रपति से मिलना हमारे जीवन का सबसे बड़ा सम्मान है।

सौर ऊर्जा से बदली जिंदगी- पिछले वर्ष 2024 की दीपावली से पहले इन बैगा परिवारों के घरों में अंधेरा था। जिला प्रशासन द्वारा क्रेडा विभाग को निर्देश दिया गया कि ग्राम पटपरी के सभी 25 घरों को सौर ऊर्जा संयंत्र से विद्युतीकृत किया जाए। दीपावली के पहले ही इन घरों में 300 वॉट के सोलर होम लाइटिंग सिस्टम लगाए गए, जिससे पहली बार इन परिवारों ने रात में रोशनी देखी।

हर घर जल योजना में कोटरा बुंदेली की उपलब्धि

गणतंत्र दिवस के अवसर पर कबीरधाम जिले की ग्राम पंचायत कोटरा बुंदेली को जल जीवन मिशन के तहत ष्हर घर जलष् योजना में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया गया। ग्राम पंचायत की जल एवं स्वच्छता समिति की अध्यक्ष के नेतृत्व में पंचायत ने जलापूर्ति को घर-घर तक सुनिश्चित किया। 63.80 लाख रूपए की लागत से लागू इस योजना के तहत 141 परिवारों को स्वच्छ पेयजल की सुविधा उपलब्ध कराई गई। 40 किलोलीटर क्षमता के जलाशय का निर्माण कर जल संकट का समाधान किया गया, जिससे ग्राम पंचायत जल समृद्धि की मिसाल बन गई।

जनपद पंचायत मैनपुर अंतर्गत मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

गरियाबंद।नगरीय निकाय एवं त्रि स्तरीय पंचायत निर्वाचन के अंतर्गत लोगों को मतदान के प्रति जागरूक करने विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसी के तहत जनपद पंचायत मैनपुर के गांव में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में ग्रामीणों एवं समूह की महिलाओं ने मतदाताओं को जागरूक करने कलश यात्रा निकाली। महिलाओं ने जागरूकता रैली निकालकर लोगों से मतदान करने की अपील की।

//न्यायालय तहसीलदार पाटन, जिला दुर्ग (छ.ग.)//
रा.प्र.क्र. 202501100900077/अ/21
वर्ष 2024-25
// ईश्तहार//

एतद द्वारा सर्व साधारण ग्राम खुड़मुड़ी प.ह.नं. 15 तहसील पाटन जिला दुर्ग के आम जनता को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि आवेदक सियाराम ठाकुर पिता जयराम ठाकुर जाति गोड़ निवासी ग्राम खुड़मुड़ी तहसील पाटन द्वारा ग्राम खुड़मुड़ी प.ह.नं. 15 तहसील पाटन जिला दुर्ग स्थित अपने नाम पर दर्ज भूमि खसरा नंबर 179 रकबा 0.10 हे. भूमि का विक्रय किये जाने हेतु कलेक्टर महोदय दुर्ग को प्रेषित आवेदन जांच हेतु प्राप्त आवेदन आधार पर प्रकरण न्यायालय में विचाराधीन है।

अतः आवेदक सियाराम ठाकुर पिता जयराम ठाकुर जाति गोड़ निवासी ग्राम खुड़मुड़ी तहसील पाटन द्वारा प्रस्तुत आवेदन आधार पर उपरोक्तानुसार भूमि विक्रय कि कार्यवाही में जिस किसी व्यक्ति / संस्था को आपत्ति हो तो लिखित आपत्ति प्रकरण में सुनवाई तिथि 10.02.2025 तक इस न्यायालय में प्रस्तुत कर सकते है। नियत तिथि के पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार का विचार नहीं किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 27.01.2025 को जारी किया गया।

मुहर

तहसीलदार
पाटन, जिला-दुर्ग (छ.ग.)

चंद्रप्रकाश चंद्रवंशी ने खेड़ापति हनुमान जी का आशीर्वाद लेकर भरा नामांकन

भाजपा से अध्यक्ष प्रत्याशी चंद्रप्रकाश सभी 27 वार्ड प्रत्याशियों के साथ रैली के रूप में नामांकन भरने पहुँचे

कवर्धा (समय दर्शन)। भारतीय जनता पार्टी की ओर से नगरपालिका अध्यक्ष युवा प्रत्याशी से चंद्र प्रकाश चंद्रवंशी ने कवर्धा के अधिपति खेड़ापति हनुमान जी दादा के आशीर्वाद प्राप्त कर अपने हजारों समर्थकों के साथ ,गाजे बाजे और उत्साह के साथ आज कलेक्टर परिसर पर पहुंचकर नगरपालिका अध्यक्ष पद का नामांकन पत्र दाखिल किया। उनके साथ कवर्धा भाजपा के सभी 27 वार्डो के अधिकृत पार्षद प्रत्याशियों ने उत्साह के साथ अपना नामाँकन फार्म भरा।

इस अवसर पर कवर्धा नगर पालिका

निर्वाचन प्रभारी लोकेश कावड़िया, पूर्व जिला अध्यक्ष भाजपा रामकुमार भट्ट, जसविंदर बग्गा विशेष रूप से उपस्थित रहे। श्री कावड़िया ने कहा भारतीय जनता पार्टी प्रत्येक चुनाव को गम्भीरता से लड़ते है। भाजपा में केवल प्रत्याशी नही अपितु एक एक कार्यकर्ता चुनाव लड़ते हैं। कार्यकर्ताओं का उत्साह बता रहा है जिले के सभी नगर पालिका एवं नगर पंचायतो में भाजपा का परचम फहराने वाला है।

नामाँकन जमा करने के बाद मीडिया को संबोधित करते हुए भाजपा नपा अध्यक्ष प्रत्याशी चंद्रप्रकाश चंद्रवंशी ने कहा कि आज का दिन बहुत बड़ा दिन होता है। जब एक कार्यकर्ता के रूप में आपके परिश्रम का पारितोष पार्टी इस तरह अवसर देकर देती है और कार्यकर्ताओं को इस तरह सम्मान देने वाली पार्टी एक मात्र भारतीय जनता पार्टी है। इस अवसर पर संगठन के शीर्ष नेतृत्व का विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह, उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा, सांसद संतोष पांडे, जिला अध्यक्ष राजेंद्र चंद्रवंशी सहित जिले के सभी नेतृत्व का मुझ पर भरोसा जताने के लिए आभार व्यक्त करता हूँ। कवर्धा नगर पालिका क्षेत्र के सभी जनता का विश्वास दिलाता हूँ नगर विकास के लिए ट्रिपल इंजन की गति से कार्य हम सब मिलकर करेंगे भव्य और दिव्य कवर्धा का निर्माण के दिशा में आगे बढ़ेंगे।

कबीरधाम जिले में उत्साह और उमंग के साथ मनाया 76 वां गणतंत्र दिवस

दुर्ग सांसद विजय बघेल ने कवर्धा के मुख्य समारोह में तिरंगा फहराया और मुख्यमंत्री का संदेश वाचन किया

कवर्धा (समय दर्शन)। जिला मुख्यालय कवर्धा के आचार्य पंथ श्री गृंधमुनि नाम साहेब शासकीय स्नात्कोत्तर महाविद्यालय (पी.जी. कॉलेज) मैदान में 76 वां गणतंत्र दिवस समारोह उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया। गणतंत्र दिवस पर दुर्ग सांसद विजय बघेल ने मुख्य समारोह में तिरंगा ध्वज फहराया। रंगबिरंगे गुब्बारे आसमान में छोड़े। उन्होंने परेड का निरीक्षण कर परेड की सलामी ली तथा जनता के नाम मुख्यमंत्री के संदेश का वाचन किया। इस अवसर पर पंडरिया विधायक श्रीमती भावना बोहरा कलेक्टर गोपाल वर्मा, पुलिस अधीक्षक धमेन्द्र सिंह, डीएफओ शशि कुमार सिंह, जिला पंचायत सीईओ अजय कुमार त्रिपाठी सहित वरिष्ठ नागरिक उपस्थित थे।

समारोह स्थल पर जिले के शासकीय एवं निजी शैक्षणिक संस्थानों के स्कूली बच्चों ने देश भक्ति, लोक कलाओं, लोक गीतों और लोक परंपराओं पर शानदार प्रस्तुति देकर दर्शकों का दिल जीता। दर्शकों ने तालियों

की गड़गड़ाहट से उनका उत्साहवर्धन किया। विभिन्न विभागों द्वारा विकास पर आधारित झांकिया निकाली गई तथा उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारी-कर्मचारियों को मुख्य अतिथि द्वारा प्रशिस्त पत्र दिया गया। परेड की विभिन्न टुकड़ियों ने देश भक्ति की धुन पर कतारबद्ध होकर सधे हुए कदमों में अनुशासनशीलता के आकर्षक मार्च पास्ट किया। इस अवसर पर सशस्त्र प्लाटून जिला पुलिस बल, नगर सेना के जवानों ने हर्ष फायर किया। गणतंत्र दिवस के अवसर पर 10 परेड दलों ने परेड कमांडर महेश्वर सिंह और सेकेण्ड कमाण्डर मनीष मिश्रा के नेतृत्व में प्लाटूनों ने आकर्षक मार्चपास्ट कर मुख्य अतिथि को सलामी दी। मंच संचालन अवधेश श्रीवास्तव एवं श्रीमती मीरा देवांगन द्वारा किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मनमोहक प्रस्तुति दी- गणतंत्र दिवस के मुख्य समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में पहला स्थान गुरूकुल पब्लिक स्कूल कवर्धा एवं दूसरा स्थान कस्तुरबा गांधी आवासीय विद्यालय रहा। वहीं रामकृष्ण पब्लिक स्कूल को तीसरे स्थान के साथ ही संतोष करना पड़ा।

आकर्षक मार्च पास्ट में सिनियर डिविजन प्लाटून में 17वीं वाहिनी छसबल को पहला, जिला पुलिस बल पुरूष को दूसरा एवं जिला पुलिस महिला को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। जूनियर डिविजन प्लाटून में एनसीसी (बालिका) आचार्य पंथ श्री गृंध मुनि नाम साहेब शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कवर्धा प्रथम स्थान, एनसीसी (बालिका) स्वामी आत्मानंद हि.मा. स्कूल कवर्धा दूसरा स्थान और एनसीसी (बालक) स्वामी करपात्री जी शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कवर्धा को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

महिला एवं बाल विकास विभाग की झांकी प्रथम- गणतंत्र दिवस के मुख्य समारोह स्थल पर विभिन्न विभागों द्वारा आकर्षक झांकिया निकाली गई। जिसमें प्रथम स्थान पर महिला एवं बाल विकास विभाग, दूसरे स्थान पर आदिम जाति कल्याण विभाग एवं तीसरे स्थान पर कृषि विभाग को प्रदान किया गया। इस अवसर पर जिला प्रशासन के 29 अलग-अलग विभागों के 127 अधिकारी-कर्मचारियों को उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

गणतंत्र दिवस पर कबीरधाम जिले के 3 शहीद के परिवार सम्मानित हुए- सांसद श्री बघेल ने गणतंत्र दिवस के मुख्य समारोह में कबीरधाम जिले के तीन शहीद जवान नरेन्द्र शर्मा के भतीजा ललित शर्मा, आरक्षक झल्लु प्रसाद नेवले के सुपुत्र जितेन्द्र नेवले और शहीद आरक्षक चंद्र सिंह मेरावी की पुत्री कुमारी संगीता मेरावी को मंच पर आमंत्रित कर शॉल, श्रीफल एवं उपहार भेंटकर सम्मानित किया।

नाम परिवर्तन

मैं अनीता विश्वास पति सुभाष चंद्र विश्वास निवासी क्वार्टर नं. 5/2 बी.एस.एन.एल. कालोनी रुआबांधा सिविक सेंटर भिलाई तहसील व जिला दुर्ग छ.ग. मेरे विवाह पूर्व नाम **ANITA KUMARI KHARATI D/O JATINDRA NATH KHARATI** है। मेरा विवाह सुभाष चंद्र विश्वास पिता विश्वेश्वर के साथ हुआ है तथा विवाह के पश्चात् मेरा नाम अनीता विश्वास पति सुभाष चंद्र विश्वास से जानी व पहचानी जाती हूं। मेरे विवाह के बाद मेरा उप नाम **VISHWASH** दर्ज है जो कि त्रुटिपूर्ण है मेरा सही उपनाम **VISHWAS** दर्ज किया जाये। मेरे नाम से जारी भारत सरकार आधार कार्ड नं. 2379 9066 9620 एवं अन्य दस्तावेजों में मेरा नाम अनीता विश्वास (**ANITA VISHWASH**) पति का सुभाष चंद्र विश्वास (**SUBHASH CHANDRA VISHWASH**) अंकित है। जो त्रुटिपूर्ण नाम है। मेरे सही व वास्तविक नाम अनीता विश्वास (**ANITA VISHWAS**) पति सुभाष चंद्र विश्वास (**SUBHASH CHANDRA VISHWAS**) के नाम से गजट प्रकाशन करवाने इसी आधार पर मेरे आधार कार्ड एवं अन्य दस्तावेजो में अंकित करवाने बाबत् यह शपथपत्र प्रस्तुत है।

शपथकर्ती

नाम परिवर्तन

मैं सुभाष चंद्र विश्वास उम्र 54 वर्ष पिता विश्वेश्वर विश्वास निवासी क्वार्टर नं. 5/2, बी.एस.एन.एल. कालोनी रुआबांधा सिविक सेंटर भिलाई तहसील व जिला दुर्ग छ.ग. मेरे कक्षा दसवीं के अंकसूची में मेरा नाम **SUBHASH CHANDRA VISHWAS S/o VISHWESHWAR VISHWAS** अंकित है। मेरे नाम से जारी भारत सरकार आधार कार्ड नं. 6512 4575 3191 में मेरा नाम सुभाष चंद्र विश्वास (**SUBHASH CHANDRA VISHWASH**) पिता का नाम पिता विश्वेश्वर विश्वास (**VISHWESHWAR VISHWASH**) अंकित है। इसी प्रकार पैन कार्ड क्रमांक **ACQPV8105K** में मेरा नाम **SUBHASH CHANDRA VISHWASH S/O VISHWESHWAR VISHWASH** अंकित हैं तथा मेरी यूनियन बैंक शाखा रिसाली भिलाई के पासबुक में मेरा नाम **SUBHASH CHANDRA VISHWASH S/o VISHWESHWAR VISHWASH** अंकित हैं। यह कि मेरे सर्विस प्रमाण पत्र में मेरा नाम **SUBHASH CHANDRA VISHWASH** अंकित है।

यह कि मेरें सही व वास्तविक नाम सुभाष चंद्र विश्वास (**SUBHASH CHANDRA VISHWAS**) पिता विश्वेश्वर विश्वास (**VISHWESHWAR VISHWAS**) के नाम से गजट प्रकाशन इसी आधार पर मेरे सर्विस प्रमाण, आधार कार्ड एवं अन्य दस्तावेजो में अंकित करवाने बाबत् यह शपथपत्र प्रस्तुत है।

शपथकर्ता

जमदरहा में आयुष मेला व स्वास्थ्य शिविर

बसना (समय दर्शन)। संचालनालय आयुष विभाग छत्तीसगढ़ शासन के निर्देशानुसार तथा जिला आयुष अधिकारी महासमुंद डॉ. प्रवीण चंद्राकर के मार्गदर्शन में विकासखण्ड बसना जिला महासमुंद के ग्राम पंचायत जमदरहा में दिनांक 28/1/2025 को प्रात: 10 बजे से सायं 5 बजे तक नि:शुल्क विकासखंड स्तरीय स्वास्थ्य मेला एवं जन जागरूकता शिविर का आयोजन भगवान धन्वंतरि की पूजा अर्चना कर शिविर का शुभारंभ ग्राम जमदरहा के वरिष्ठ गणमान्य नागरिकों के कर कमलो से हुआ । शिविर में शिविर प्रभारी डॉ. रंजना पटेल, डॉ. मुक्ता बरिहा, डॉ.शिवशंकर मांझी, डॉ. दुष्यंत प्रधान, डॉ. डोला राम भोई, डॉ. देवेंद्र कुमार नायक,आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी ,फार्मासिस्ट गणेश सिंह जगत,धरम सिंह ठाकुर, तेजराम दीवान, सुफेद सिंह पैकरा, औषद्यालय सेवक चतुर्भुज स्वाइ , अंशकालीन

स्वच्छक राजकुमारी, रामबती,अघन मति, उजागर सिंह जगत का विशेष सहयोग रहा। उक्त शिविर में कुल 509 रोगी लाभान्वित हुए जिसमे 279 रोगियों की ब्लड प्रेशर जांच एवं 88 रोगियों की मधुमेह जांच की गई , शिविर में अधिकांश वात रोग, उदर रोग, चर्म रोग के रोगियों का नि:शुल्क रोगानुसार चिकित्सा कर औषधि वितरण एवम् आहार-विहार की जानकारी दी गई। सभी को आयुर्वेदिक काढ़ा पिलाया गया।

शिविर में उपस्थित ग्रामीणजनो को संक्रामक रोगों से बचाव के बारे मे तथा आगामी बंसत ऋतु के अनुसार दिनचर्या एवं ऋतुचर्या पालन के संबंध में जानकारी भी दी गई और पॉम्पलेट वितरण किया गया । स्थानीय स्तर पर पाए जाने वाले औषधीय पौधे जैसे वासा, नीम, तुलसी, गिलोय, अर्जुन , अदरक आदि के औषधीय प्रयोग की जानकारी दी गई।

पीएमश्री सेजेस बसना में गणतंत्र दिवस समारोह आयोजित

बसना (समय दर्शन)। पीएमश्री सेजेस बसना में 76वें गणतंत्र दिवस का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बी.पी. पुरोहित ने शिरकत की। उनके साथ विशेष अतिथि आर.बी. प्रधान और के.के. दास भी कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने पहुंचे। समारोह की अध्यक्षता के.के. पुरोहित ने की। कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों व संस्था प्रमुखों के करकमलों से राष्ट्रीय ध्वज फहराने पश्चात,एनसीसी,स्काउट,रेडक्रास,एन एस एस का भण्डा फहराया गया तत्पश्चात राष्ट्रगान हुआ।

स्कूल के विद्यार्थियों ने देशभक्ति गीत और रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया।

प्रधान पाठक एच.के. दास (माध्यमिक) और एच.आर. साव (प्राथमिक) के मार्गदर्शन में कार्यक्रम की तैयारी की गई। वरिष्ठ व्याख्याता एन.के. ध्रुव और समस्त शिक्षक-शिक्षिकाओं ने आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम का संचालन संदीप अग्रवाल ने किया। मीडिया प्रभारी योगेश बढ़ाई ने यह जानकारी प्रदान की।

संपन्न हुआ बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का राज्य स्त्रोत शिक्षको का प्रशिक्षण

होमन सिंह ठाकुर/समय दर्शन नंदिनी अहिवारा। डाइट दुर्गा के अंतर्गत आने वाले दोनों जिले दुर्ग एवं बालोद के चयनित राज्य स्त्रोत शिक्षकों का स्वरूह आधारित प्रशिक्षण एनसीईआरटी रायपुर में संपन्न हुआ । ये प्रशिक्षण 14 /01/ 2025 से 20/01/ 2025 तक संपन्न हुआ। इस प्रशिक्षण में दिनांक 17 /1/2025 को टी एल एम मेला का आयोजन किया गया ,जिसमें शालेय विद्यार्थियों द्वारा एफएल एन में निहित दक्षताओं पर आधारित टी एल एम का निर्माण किया गया प्रशिक्षण में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में दोनों जिलों के स्वरूह समन्वयक में डाइट दुर्ग के अकादमिक सदस्य एवं स्त्रोत शिक्षकों में सक्रिय सहभागिता प्रदान की। एनसीईआरटी में आयोजित इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य निपुण भारत मिशन के उद्देश्यों को अपने राज्य के संदर्भ में प्राप्त करना था उद्देश्य की पूर्ति रुचिकर एवं आनंदमयी वातावरण में गतिविधियों के द्वारा किस प्रकार हो सकती है । इस हेतु राज्य स्त्रोत शिक्षकों को मनोरंजन बाल केंद्रित तरीके बताए गए जबकि शिक्षक केवल सुविधा दाता की भूमिका का निर्वहन करेंगे ।इस प्रशिक्षण में दुर्ग जिले के समन्वयक डॉक्टर एच के साहू (सहायक अध्यापक डाइट दुर्ग) स्त्रोत शिक्षक श्री सूर्यकांत हरदेव (संकुल समन्वयक)श्री महेंद्र बहादुर (संकुल समन्वयक)श्री नकेश्वर महिपाल सहायक शिक्षक एवं बालोद जिले की समन्वयक श्रीमती आभा वर्मा खोसला (व्याख्याता डाइट दुर्ग) स्त्रोत शिक्षक श्री लोमस कुमार साहू (संकुल समन्वयक),श्री संतोष डहरे शिक्षक एवं श्रीमती गीतिका महोबिया सहायक शिक्षक ने प्रशिक्षण में महती भूमिका का निर्वहन किया। परिषद प्रभारी श्री सुनील मिश्रा ने अपने संदेश में समन्वयक एवं स्त्रोत शिक्षकों से चर्चा में प्रशिक्षण के बतायी गई बातों को शाला में विद्यार्थियों के स्तर के उन्नत करने हेतु मार्गदर्शन प्रदान करने की बात कही । प्रशिक्षण की उपादेयता तभी सार्थक है जब उसे अंतिम लक्ष्य तक पहुंचा जा सके।

निकाय चुनाव की बिछी बिसात, पिथौरा में शक्ति प्रदर्शन के साथ नामांकन

पिथौरा (समय दर्शन)। छत्तीसगढ़ के महासमुन्द जिला अंतर्गत बसना विधानसभा के पिथौरा मे नगरीय निकाय चुनाव की बिसात बिछ गई है। पिथौरा में कांग्रेस और भाजपा के अध्यक्ष एवं पार्षद उम्मीदवारों ने शक्ति प्रदर्शन के साथ नामांकन दाखिल किया गया । 22 जनवरी से 28 जनवरी तक नामांकन दाखिल करना निर्धारित था ।31 जनवरी तक नाम वापसी की आखिरी तारीख है। नगरीय निकाय चुनावों में 11 फरवरी को वोटिंग होगी और 15 फरवरी को नतीजे घोषित किए जाएंगे। राज्य में कुल 192 नगरीय निकाय हैं। इनमें 10 नगर निगम, 54 नगर पालिका परिषद और 114 नगर पंचायत शामिल हैं। इन निकायों के अध्यक्ष पदों के लिए चुनाव होंगे।

पिथौरा नगर पंचायत अध्यक्ष पद हेतु भाजपा से देवेश निषाद रानीमहल परिसर से सभी पार्षद प्रत्याशी एवं बडी संख्या में समर्थकों तथा बसना विधायक सम्पत अग्रवाल के साथ रैली निकालकर नामांकन भरने पहुंचे तो वहीं काँग्रेस से अध्यक्ष प्रत्याशी आत्माराम यादव के साथ में बसना के पूर्व विधायक राजा देवेंद्र बहदुर सिंह एवं सभी पार्षद उम्मीद्वारों एवं बडी संख्यां में नगरवासी किर्तन एवं करमा नृत्य के साथ बाजे गाजे के साथ वार्डों में रैली निकालकर स्छरू कार्यालय पहुंची, जहां नामांकन दाखिल किया गया।

नामांकन के दिन ही आरोप-प्रत्यारोप की लगी झड़ी- पिथौरा नगर पंचायत अध्यक्ष एवं पार्षद हेतु भाजपा एवं कांग्रेस से नामंकन दाखिल करने के बाद बसना विधायक सम्पत अग्रवाल ने कहा कि, यहां के जनता की एक ही मांग है बस कांग्रेस को हटाकर भाजपा को जिताना है।

भाजपा से अध्यक्ष पद के ऊम्मीदार निषाद ने कांग्रेस पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि,पिथौरा नगर में प्रधानमंत्री आवास योजना में जमकर गडबडी हो रही है। जो लोग कई साल से आवास के लिए भटक रहे हैं उन्हें योजना का लाभ नहीं मिल रहा है। कई लोग ऐसे हैं जो आज आवेदन किये और कल उनकी आवास स्वीकृत हो जाती है । साथ ही गौरव पथ निर्माण में हो रही अनियमिता की आरोप लगाते हुए देवेश निषाद ने गौरवपथ की जगह उसे सिरदर्द पथ कहा।

नगर पंचायत पिथौरा के वर्तमान अध्यक्ष : आत्माराम यादव को कांग्रेस पार्टी ने पुन: मैदान में उतारा है । आत्माराम यादव का कहना है अध्यक्ष पद के लिए मैदान में उतारने के लिए भाजपा के पास कोई चेहेरा नहीं था । पांच साल के विकास कार्य को देखकर बीजेपी वाले घबरा गये हैं। उनके पास कोई मुद्दा नहीं है जो जनता को बता सकें। आरोप लगाने से अच्छा है कि,सरकार उनकी हैं जांच करा लें । पिथौरा नगर में विकास कार्य हो रहा है,, नगरवासी विकास कार्य और कांग्रेस के साथ हैं।

कांग्रेस से बसना के पूर्व विधायक राजा देवेंद्र बहदुर सिंह का कहना है कि निष्क्रियता एवं सक्रियता की लडाई है। पिछले 20 सालों से पिथौरा नगर की विकास नहीं हो रहा था। गौरव पथ सौन्दर्याकरण, खेल मैदान में लाईट एवं अनेक विकास कार्य हुए हैं इसलिए यहां की जनता कांग्रेस के साथ हैं।

आपको बता दें देवेश निषाद कांग्रेस पार्टी से 20 साल तक नगर पंचायत पिथौरा के अध्यक्ष रह चुके हैं जिसमें 5 साल का कार्यकाल उनकी पत्नी का है। देवेश निषाद कांग्रेस पार्टी छोडकर बीजेपी ज्वाइन कर ली । देवेश निषाद की लोकप्रियता को देखकर भाजपा ने उन्हें चुनावी मैदान पर उतारा है । अब आनेवाले दिनों देखना होगा यहां की चुनाव मुकाबला कितना दिलचस्प होगा।

युवा आजाद समिति द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता का समापन, मधुबन खुर्द (बलौदाबाजार) ने मारी बाजी

शंकर लहरे/सरायपाली (समय दर्शन)। युवा आजाद समिति रोहिना द्वारा गणतंत्र दिवस के पावन अवसर राज्य पर,ऐतिहासिक रूप से आयोजित 38 वें वर्ष का दो दिवसीय छत्तीसगढ़ राज्य स्तरीय ग्रामीण कबड्डी प्रतियोगिता का समापन व पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्य अतिथि युगल किशोर प्रधान युवा समाज सेवी हरदी, अध्यक्षता मोहम्मद बदरुद्दीन कारगिल युद्ध में पाकिस्तानी घुसपैठियों से लड़ने वाले रिटायर आर्मी ऑफिसर ने की,विशिष्ठ अतिथि राजकुमार पटेल अध्यक्ष क्षेत्रीय खेल एवं सांस्कृतिक विकास समिति, हेमकुमार गड़तिया रेलवे पुलिस चरौदा,ध्रुव मालिक संरक्षक क्षेत्रीय खेल एवं सांस्कृतिक विकास समिति सरायपाली, सादराम अजय शिक्षक ,ठण्डाराम बरिहा सचिव,घसिया सिदार सरपंच ग्राम पंचायत लोहरिनडीपा उपस्थित थे।

मुख्य अतिथि ने संबोधित करते हुए कहा कि युवा आजाद समिति - रोहिना द्वारा लगातार 38 वर्ष कबड्डी प्रतियोगिता आयोजित करना प्रेरणादायी है।उन्होंने कहा कि खेल शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहने में मदद करता है ।सेवा ,सहयोग, प्रेमभाव से जीना सिखाता है। कबड्डी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान मधुबन खुर्द (बलौदाबाजार) ने नरतोरी (झलप) के टीम को 21 अंकों के बड़े अंतर से हराकर 21001 रुपये व ट्रॉफ़ी प्राप्त किया ।द्वितीय स्थान नरतोरी (झलप) ने 11001रुपये व ट्रॉफ़ी, तृतीय गिरीराजपुर ने 7001 रुपये व ट्रॉफी,चतुर्थ स्थान रोहीना(अ) ने प्राप्त किया।

क्वार्टरफाइनल में पहुँची चार अन्य टीम रसोड़ा, रूपापाली, लमकसा, तोरेसिन्हा को सांत्वना पुरस्कार - 1001 रुपये व ट्रॉफ़ी प्रदान किया गया।

पूरे प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन कर मधुबनखुर्द के चंद्रपाल बंजारे ने बेस्ट ऑलराउंडर का खिताब व फाइनल मैच का मेन ऑफ द मैच प्राप्त किया ।बेस्ट रेडर नारतोरी के गोपाल ने व बेस्ट केचर मधुबन खुर्द के प्रदीप बंजारे ने शानदार खेल का प्रदर्शन कर प्राप्त किया।

दो दिवसीय कबड्डी प्रतियोगिता में छत्तीसगढ़ के अलग अलग जिलों से कुल 35 टीमों ने अपने खेल कौशल का प्रदर्शन किया। कबड्डी प्रतियोगिता के संचालन हेतु महासमुंद जिले से राष्ट्रीय निर्णायक केशव सेठ,अक्षय सिदार,हेमंत बारीक,जयकृष्ण चौधरी, राज्य निर्णायक मिनकेटन पटेल, खिरसागर केवर्त, क्षितिपति साहू, वरुण बाग, दिव्यकुमार , कन्हैयालाल पटेल, रामप्रसाद पटेल, कौशिक सेठ, उड़ीसा से उमाशंकर साहू, बिलासपुर जिले से जितेंद्र सर्राफ(राष्ट्रीय), कमलेश यादव ने जिम्मेदारी संभाली।

बीच- बीच में बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। दो दिवसीय कबड्डी प्रतियोगिता को देखने के लिए आसपास के ग्रामीणों के साथ-साथ,दूर -दूर से खेलप्रेमियों की हजारों की संख्या ,देर रात तक मौजूद रही तथा इसका सीधा प्रसारण मनीष पटेल दुर्गापाली ने यू ट्यूब चैनल लोक सागर में किया, जिससे घर बैठे दर्शकों ने;देखकर खेल का आनंद उठाया।पूरे कबड्डी प्रतियोगिता का आंखों देखा हाल ,प्रसिद्ध कबड्डी कमेंट्रेटर प्रेमानंद भोई व खिरसागर कैवर्त ने सुनाया। समापन समारोह का संचालन संजोजक नरहरि साहू व प्रेमानंद भोई प्राचार्य दुलारपाली ने किया। कबड्डी प्रतियोगिता के शानदार ढंग से आयोजन में सहयोग करने वाले दानदाताओ,खिलाड़ियों, कबड्डी निर्णायकों,क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों, दर्शकों का युवाआजाद समिति के अध्यक्ष लोचन प्रसाद साहू,संरक्षक केशव सेठ,कोषाध्यक्ष दामोदर साहू,सचिव मनोरंजन साहू,संयोजक नरहरि साहू,व पदाधिकारीयों,सदस्यों ने आभार व्यक्त किया है।

किड्स एजुकेशनल इंस्टिट्यूशन बंसुला में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया गणतंत्र दिवस

बसना (समय दर्शन)। किड्स एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन इंग्लिश मीडियम स्कूल बंसुला में गणतंत्र दिवस विद्यालय कार्यक्रम का शुभारंभ तहसील साहू समाज अध्यक्ष बसना पंकज साव, प्रकाश सिन्हा विधानसभा कार्यालय प्रभारी बसना, परीक्षित साव, अभय धृतलहरे,आर. के.दास, देशराज दास, प्राचार्य भगवती जगत उपप्राचार्या नंदनी प्रधान, उषा बीसी हसीना बेगम तनु निशा शबनम जौहरी वसुंधरा साव व दीपिका साहू गणेश सिदार , पप्पू चौहान खिलेंद्र परेश्वर विद्यालय के समस्त शिक्षक-शिक्षिकाओं व विद्यार्थियों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे को ध्वजारोहण किया गया। तत्पश्चात राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत, राज्यगीत,

प्लेज व अन्य देशभक्ति नारों से विद्यालय प्रांगण गूंजायमान हो गया। तत्पश्चात मां सरस्वती, मां भारती व छत्तीसगढ़ महतारी के छायाचित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन, माल्यार्पण व तिलक वंदन के साथ श्रीगणेश हुआ। तत्पश्चात विद्यालय प्रांगण में उपस्थित समस्त अतिथिगण व सदस्यों का तिलक, पुष्पगुच्छ व पुष्पहार से स्वागत किया गया। संबोधन की कड़ी में संस्था प्रमुख आर.के.दास द्वारा बच्चों को देश में सकारात्मक नवाचार अपने जीवन में संविधान के समान

अनुशासन व कर्तव्य को अपनाकर जीवन में सफल होने की सीख दी गई। प्राचार्य भगवती जगत द्वारा अमर शहीदों के बालिदान को याद किया गया एवं शहीद जवानों के तरह अपने कर्तव्य का पालन करने की सीख दी। विद्यालय प्रांगण में उपस्थित अतिथिगण पंकज साव तहसील अध्यक्ष बसना परीक्षित साव द्वारा गणतंत्र दिवस पर अपने विचार भाषण, गीत व कविता के माध्यम से प्रकट किए गए। इस अवसर पर आभार व्यक्त उपप्राचार्या नंदनी प्रधान द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन अभय घृतलहरे ने किया।

कार्यक्रम के अंत में सभी छात्र-छात्राओं को मिष्ठान वितरण कर कार्यक्रम की समापन कि घोषणा की गई। कार्यक्रम में विद्यालय की समस्त शिक्षिकाओं का योगदान रहा।

संक्षिप्त-खबर

नोविना अमृत जगत ने दाखिल किया नामांकन, विकास को दी प्राथमिकता

बसना (समय दर्शन)। मंगलवार को जिला पंचायत क्षेत्र क्रमांक 11 से नोविना अमृत जगत ने अपना नामांकन पत्र खरीदा। क्षेत्र में उनकी लोकप्रियता और जनता के साथ गहरा जुड़ाव उनकी सबसे बड़ी ताकत मानी जा रही है। नोविना की छवि साफ-सुथरी और विकासोन्मुख नेता की है, जिसके चलते क्षेत्र की जनता उनके प्रति विश्वास व्यक्त कर रही है।

नामांकन पत्र खरीदने के बाद मीडिया से बात करते हुए नोविना अमृत जगत ने कहा, यह चुनाव मेरे लिए सिर्फ एक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि क्षेत्र के विकास और जनकल्याण का अवसर है। मेरी प्राथमिकता हर वर्ग की समस्याओं का समाधान करना और विकास कार्यों को नई गति देना है।

पहले कर चुकी हैं करोड़ों का विकास कार्य : नोविना अमृत जगत ने अपने पिछले कार्यकाल में करोड़ों के विकास कार्य किए थे, जो आज क्षेत्र में उनकी पहचान बन चुके हैं। प्रेस वार्ता के दौरान उन्होंने बताया कि जनता के कहने पर उन्होंने पुन: चुनाव लड़ने का निर्णय लिया है,वे क्षेत्र के सभी समाज से सीधे जुड़े हुए है। उनका वायदा है कि, वे क्षेत्र के विकास को नई ऊंचाई तक ले जाएंगी।

नोविना को लेकर क्षेत्र की जनता मे बढ़ी उम्मीदें : उनके नामांकन को लेकर पूरे क्षेत्र में उत्साह का माहौल है। लोगों का मानना है कि नोविना अमृत जगत के नेतृत्व में क्षेत्र की समस्याओं का समाधान होगा और विकास कार्यों में तेजी आएगी।

ग्राम खल्लारी से कुबेर यदु ने भरी जीत की हुंकार, 30 को भरेंगे नामांकन

खल्लारी (समय दर्शन)। छत्तीसगढ़: मातृभूमि के विकास और ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र उत्थान के उद्देश्य से, संकल्पित युवा संगठन के प्रमुख सदस्य कुबेर यदु ने ग्राम पंचायत खल्लारी से सरपंच पद के लिए अपनी उम्मीदवारी की घोषणा की है। मोदी के आह्वान युवा भारत, सशक्त भारत से प्रेरित होकर, कुबेर यदु ने सक्रिय राजनीति में कदम रखते हुए ग्राम पंचायत के विकास और सामाजिक समृद्धि के लिए अपने विचार साझा किए।

युवाओं का राजनीति में योगदान : कुबेर यदु का मानना है कि युवा शक्ति के समावेश के बिना किसी भी राष्ट्र या समाज का विकास अधूरा है मोदी के योग्य और सक्षम युवाओं को राजनीति से जोड़ने के आह्वान से प्रेरित होकर, उन्होंने राजनीति में प्रवेश करने का निश्चय किया है। उन्होंने कहा, युवाओं को केवल शिक्षा, रोजगार, और तकनीकी कौशल तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उन्हें प्रशासन और निर्णय प्रक्रिया में भी अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए।

ग्राम पंचायत खल्लारी के विकास के लिए दृष्टिकोण : कुबेर यदु ने खल्लारी ग्राम पंचायत के विकास को अपनी प्राथमिकता बताते हुए कई महत्वपूर्ण योजनाओं की घोषणा की है:

1. कृषि और जल प्रबंधन:
सिंचाई की बेहतर व्यवस्था।
फसल बीमा योजना को प्रभावी ढंग से लागू करना।
किसानों के लिए नवीनतम कृषि तकनीकों का प्रशिक्षण।
2. शिक्षा और रोजगार:
स्कूलों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना।
युवाओं के लिए स्वरोजगार योजनाएं।
महिलाओं के लिए कौशल विकास केंद्र स्थापित करना।
3. स्वास्थ्य और स्वच्छता:
सभी घरों में शुद्ध पेयजल की उपलब्धता।
स्वास्थ्य केंद्रों का आधुनिकीकरण।
स्वच्छ भारत अभियान को गांव में प्रभावी रूप से लागू करना।

अब तक 152352 किसानों से 1089356 टन धान खरीदा गया

महासमुन्द (समय दर्शन)। खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 के अंतर्गत जिले में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी अभियान सुचारू रूप से जारी है। नोडल अधिकारी अविनाश शर्मा ने बताया कि 28 जनवरी तक 182 उपार्जन केंद्रों के माध्यम से एक लाख 52 हजार 352 किसानों से 10 लाख 89 हजार 356 टन धान खरीदा गया, जिसकी राशि 2505 करोड़ 51 लाख रुपए किसानों को वितरित की गई। उन्होंने बताया कि जिले के उपार्जन केन्द्रों में 2 करोड़ 93 लाख 74 हजार 604 बारदाना प्राप्त हुआ है। जिसमें एक करोड 43 लाख 84 हजार 746 नया बारदाना है। एक करोड़ 27 लाख 95 हजार 757 बारदाना मिलर से प्राप्त, 17 लाख 20 हजार 549 पीडीएस से प्राप्त तथा किसानों से 4 लाख 73 हजार 552 बारदाना प्राप्त हुआ है।

स्वामित्वधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक रोहित खड़तकर द्वारा समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स ग्राम छाटा, पोस्ट देवादा, तहसील पाटन, जिला दुर्ग (छ.ग.), पिन-491111 से मुद्रित कर 65/1920, परशुराम नगर प्रोफेसर कालोनी, रायपुर (छ.ग.) पिन- 492001 से प्रकाशित। संपादक :- दामोदर राव, फोन नं.-0771-4218364, मो. 9303404360, ईमेल- samaydarshanraipur@gmail.com, RNI: CHHHIN/2018/76878, डाक पंजीयन /रायपुर संभाग/63/2022-24